

जीवन में वही व्यक्ति  
दुखी है जो खाली है  
काम में व्यस्त रहे और  
मस्त रहे।

# परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 346, नई दिल्ली, शनिवार 14 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

● 03 शनि देव और बूढ़ी माई की ममता

● 06 मोबाइल, नशा और तनाव - बचपन पर तीन वार....

● 08 वेलेंटाइन डे की 'आड़' में गुमनाम होती जवानों की शहादत।

## टैपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट द्वारा नजफगढ़ में घर-घर अन्न वितरण अभियान, जरूरतमंदों को मिला सहारा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। टैपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट द्वारा नजफगढ़ क्षेत्र में व्यापक स्तर पर घर-घर जाकर अन्न वितरण अभियान चलाया गया। इस सेवा कार्य का नेतृत्व राष्ट्रीय महासचिव पिकी कुंडू एवं सचिव सुनीता शर्मा ने किया। अभियान के अंतर्गत क्षेत्र के जरूरतमंद एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को राशन सामग्री वितरित की गई।

ट्रस्ट की टीम ने नजफगढ़ के विभिन्न मोहल्लों में जाकर स्वयं परिवारों से संपर्क किया और उन्हें खाद्यान्न किट प्रदान की। वितरण में आटा, चावल, दाल, तेल एवं अन्य आवश्यक सामग्री शामिल रही। इस दौरान महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों की विशेष आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा गया।

राष्ट्रीय महासचिव पिकी कुंडू ने कहा कि ट्रस्ट का उद्देश्य समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सहायता पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि सेवा ही संगठन का मूल मंत्र है और भविष्य में भी ऐसे जनहित कार्य निरंतर जारी रहेंगे। सचिव सुनीता शर्मा ने बताया कि ट्रस्ट समय-समय पर शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण से जुड़े कार्यक्रम भी संचालित करता है।

स्थानीय नागरिकों ने ट्रस्ट की इस पहल की सराहना करते हुए इसे मानवता की सच्ची सेवा बताया। कार्यक्रम में ट्रस्ट के अन्य पदाधिकारी एवं स्वयंसेवक भी सक्रिय रूप से उपस्थित रहे।

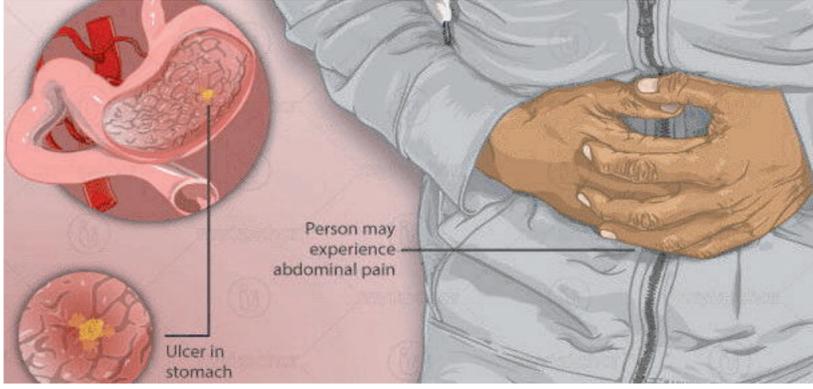
नजफगढ़ क्षेत्र में चलाया गया यह अन्न वितरण अभियान सामाजिक संवेदनशीलता और सेवा भावना का सशक्त उदाहरण बनकर सामने आया।





पिंकी कुडू

## पेट का अल्सर (Peptic Ulcer)



और पारंपरिक अनुभवों पर आधारित हैं, इनका उद्देश्य केवल सहायता और जागरूकता है।  
पेट के अल्सर के सामान्य लक्षण  
\* पेट में दर्द या जलन  
\* रात के समय पेट की तकलीफ बढ़ना  
\* जी मिचलाना  
\* भूख में बदलाव  
\* वजन में कमी  
\* कुछ मामलों में मल का रंग गहरा होना या उल्टी में खून आना  
\* यदि लक्षण गंभीर हों, तो चिकित्सकीय सलाह आवश्यक है।  
पारंपरिक व घरेलू उपाय (सहायक रूप में)

1. ठंडा दूध कुछ लोगों को ठंडा दूध पेट को अस्थायी आराम देने में सहायक लग सकता है। हल्के रूप में पानी मिलाकर सेवन किया जाता है।  
2. नाशपाती नाशपाती में पाए जाने वाले एंटी-ऑक्सिडेंट और फाइबर पाचन तंत्र को सहयोग दे सकते हैं।  
3. बादाम सीमित मात्रा में बादाम या बादाम का दूध पाचन को संतुलित रखने में मददगार माना जाता है।  
4. कच्चा और पका केला केले में मौजूद प्राकृतिक गुण पेट की अम्लता को संतुलित करने में सहायक हो सकते हैं।

5. गाय का घी परंपरागत रूप से गाय के दूध से बने घी का सीमित सेवन पाचन तंत्र को अस्थायी आराम देने में सहायक माना गया है।  
6. शहद शहद में मौजूद प्राकृतिक तत्व पेट के वातावरण को संतुलित रखने में सहायता कर सकते हैं।  
7. पत्ता गोभी पत्ता गोभी और गाजर का ताजा रस कुछ लोगों में पाचन तंत्र को समर्थन देने में सहायक माना गया है।  
8. हींग हींग का उपयोग पारंपरिक रूप से पाचन सुधार के लिए किया जाता रहा है।  
9. पोहा पोहा हल्का और फाइबर-युक्त भोजन है, जिसे पाचन में अपेक्षाकृत आसानी होती है।

## दाल का पानी पीने से सेहत को मिल सकते हैं ये सामान्य लाभ



1. प्राकृतिक पोषक तत्वों का स्रोत दाल का पानी प्राकृतिक रूप से कुछ ऐसे पोषक तत्वों से भरपूर होता है, जो शरीर के सामान्य स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक हो सकते हैं। इसे संतुलित आहार के एक हिस्से के रूप में लिया जा सकता है।
2. वजन संतुलन में सहायक दाल के पानी में मौजूद प्रोटीन तृप्ति को भावना देने में मदद कर सकता है, जिससे अनावश्यक खाने की इच्छा कम हो सकती है। यह वजन प्रबंधन के लिए एक सहायक विकल्प हो सकता है।
3. पाचन को सपोर्ट करने में मदद दाल का पानी हल्का और आसानी से पचने वाला माना जाता है। इसमें मौजूद पोषक तत्व पाचन तंत्र के सामान्य कार्य में सहयोग कर सकते हैं और अपच जैसी समस्याओं में सहायक हो सकते हैं।
4. शारीरिक ऊर्जा के लिए उपयोगी दाल के पानी में पाए जाने वाले अमीनो एसिड और अन्य तत्व शरीर की सामान्य ऊर्जा और कार्यक्षमता को बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।
5. हृदय स्वास्थ्य को सपोर्ट दाल का पानी संतुलित जीवनशैली के साथ लेने पर हृदय स्वास्थ्य को सपोर्ट करने में सहायक हो सकता है। यह संपूर्ण स्वास्थ्य देखभाल का एक हिस्सा बन सकता है।
6. विटामिन और मिनरल्स की उपलब्धता दाल के पानी में आयरन, मैग्नीशियम, फॉलिक एसिड और विटामिन बी कॉम्प्लेक्स जैसे तत्व पाए जा सकते हैं, जो शरीर की दैनिक पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करते हैं।

## लहसुन से हो जायेगा कार्याकल्प

**बिनापढ़े मत छोड़ना**  
लहसुन की उत्पत्ति मध्य एशिया से मानी जाती है। आज लहसुन भारत, चीन, फिलीपीन्स, ब्राजील, मैक्सिको आदि सभी देशों में बहुत बड़े पैमाने पर पैदा होता है। लहसुन में खनिज एवं विटामिनों की काफी अधिक मात्रा होती है। इसमें आयोडीन, गंधक, क्लोरीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस, लोहा, विटामिन 'सी' 'बी' काफी मात्रा में पाए जाते हैं।  
रोग निवारक गुणों में लहसुन का प्रयोग दमा, बहरापन, कोढ़, छाती में बलगम, बुखार, पेट के कीड़े, यकृत के रोग, हृदय रोग, रक्त-विकार, वीर्य-विकार, क्षय आदि रोगों में लाभकारी है।  
आयुर्वेद के आचार्यों का मानना है कि लहसुन के प्रयोग से कई प्रकार के रोगों से बचा जा सकता है। शारीरिक शक्ति और वीर्यवर्द्धन में लाभकारी है। यह पौष्टिक, वीर्यवर्द्धक, गर्म, पाचक, मल-निष्कासक तीक्ष्ण तथा मधुर है।  
लहसुन के गुणों की आधुनिक खोज भी प्राचीन विचारों की पुष्टि करती है। लहसुन को हृदय रोगों में 'अमृत' की संज्ञा दी गई है।  
**विभिन्न रोगों में लहसुन का उपयोग**  
**क्षय रोग**  
10, 12 तुर्रियों को पाव भर दूध में अच्छी तरह उबाल लें। तुर्रियों को खाकर दूध पीने से तपेदिक व क्षय रोग में आराम मिलता है।  
**फेफड़े के रोग**  
यदि फेफड़े के पर्दे पर अधिक तरल जमा होने से सांस लेने में कठिनाई हो और ज्वर हो तो लहसुन पीसकर आटे में इसकी पुलटिस बनाकर दर्द वाले स्थान पर बांधने से आराम मिलता है।  
**दमारोग**  
लहसुन का रस गुन-गुने पानी में मिलाकर पीने से सांस का दर्द दूर होता है। लहसुन को दो तुर्रियों को देशी घी में भूनकर दिन में दो बार खाने से र्वांस के कष्ट दूर होते हैं। शहद में लहसुन का रस मिलाकर चाटने से भी रोगी को आराम मिलता है। दमे के दौरों में भी लहसुन का रस व शहद मिलाकर चाटने से दौरे का कष्ट दूर होता है।  
लहसुन दूध में उबालकर रात को पीने से दमा में लाभ होता है।  
लहसुन को सिरके में उबालकर ठंडा कर शहद मिलाकर पीने से दमे के रोगी को लाभ होता है।  
लहसुन छाती के सभी रोगों में लाभदायक है, यह सांस व दमे पर नकेल डालता है।  
**पाचन तंत्र**  
पेट के रोग के लिए लहसुन बहुत लाभदायक है। यह गैस और अम्लता को शिकायत दूर करता है। लहसुन के प्रयोग से



आंतों में पाचक रस उत्पन्न होते हैं तथा पेट के रोगों को समाप्त करने में सहायता मिलती है। इसका प्रभाव शरीर में विद्यमान विष को दूर करता है। आंतों और पेट में किसी भी प्रकार से संक्रमण से उत्पन्न सूजन समाप्त हो जाती है। लहसुन में पाया जाने वाला एंटी-सेप्टिक तत्व संक्रामक रोगों से रोकथाम करता है।  
**पेट का कैसर**  
पेट में कैसर होने की स्थिति में पानी में लहसुन को पीसकर कुछ समय रोगी को पिलाते रहने से पेट से कैसर दूर हो जाता है।  
**अमाशय का फोड़ा**  
अमाशय में यदि कोई फोड़ा हो जाए तो ऐसी स्थिति में भी लहसुन का प्रयोग करने से रोगी को लाभ होता है। ऐसे में लहसुन की दो तीन तुर्रियाँ चबाकर खानी चाहिए।  
**पेट के कीड़े**  
पेट दर्द, पेशिया, दस्तों में भी लहसुन का प्रयोग लाभदायक है। पेट के रोगों में लहसुन के कैप्सूल भी उपलब्ध हैं। लहसुन से आंतों के विषाणु नष्ट होते हैं।  
**हृदय रोग**  
हृदय रोग के लिए लहसुन को 'अमृत' की संज्ञा दी गई है। हृदय रोग का मुख्य कारण रक्त वाहिनियों, धमनियों का सिकुड़ जाना है और इनसे कोलेस्ट्रॉल जम जाता है जिसके कारण शरीर में रक्त-प्रवाह ठीक प्रकार से नहीं हो पाता। लहसुन के प्रयोग से सिकुड़ी हुई अथवा रुकी हुई धमनियाँ साफ हो जाती हैं और व्यक्ति हृदय रोग से मुक्ति पा लेता है।  
लहसुन की दो तीन तुर्रियाँ चबा लेने से हार्ट फेल होने की नौबत नहीं आती, ऐसे में नियमित लहसुन दूध के साथ प्रयोग करना चाहिए। लहसुन के सेवन से हृदय पर पड़ने

वाला गैस का दबाव कम होता है। यह कोलेस्ट्रॉल को समाप्त करता है तथा हृदय रोगों को नया जीवन देता है।  
**रक्त चाप**  
लहसुन का प्रयोग रक्त को पतला करता है इसलिए उच्च रक्तचाप से बचाता है। उच्च रक्तचाप का प्रमुख कारण भी धमनियों का संकुचित होना है। लहसुन के प्रयोग से धमनियों की सिकुड़न समाप्त हो जाती है। लहसुन, पुदीना, जीरा, धनिया, काली मिर्च, सेंधा नमक की चटनी खाने से रक्तचाप कम होता है।  
**जोड़ों के दर्द**  
लहसुन के प्रयोग से जोड़ों के दर्द में कमी आती है, इससे जोड़ों की सूजन कम होती है, दर्द व सूजन वाले स्थान पर लहसुन का रस लगाने से दर्द कम हो जाता है सूजन दूर होती है। जिन्हें लहसुन की गंध से परहेज है वे रात को लहसुन को घोलकर पानी में भिगोकर सुबह धोकर खाएँ। आजकल लहसुन के कैप्सूल भी बाजार में उपलब्ध हैं, उनका प्रयोग किया जा सकता है।  
**कैसर**  
लहसुन का रस कैसर में लाभदायक होता है। पानी में लहसुन का रस मिलाकर पीने से कैसर में फायदा होता है, कैसर की रसौली भी लहसुन के रस के सेवन से नष्ट हो जाती है।  
**नपुंसकता**  
किसी भी तरह से प्रयोग किया गया लहसुन नपुंसकता दूर करता है। नपुंसक लोगों को 15-20 लहसुन की तुर्रियों को घी में तलकर खाना चाहिए।  
लहसुन के रस को शहद के साथ सेवन

करने से भी नपुंसकता दूर होती है। नपुंसक व्यक्ति लहसुन की तुर्रियों को दूध से उबालकर भी सेवन कर लाभ उठा सकते हैं।  
**त्वचा विकार**  
लहसुन का प्रयोग त्वचा के विकारों को भी दूर करता है। लहसुन को चेहरे पर दिन में कई बार मलने से कील मुहांसे दूर होते हैं, आंखों के नीचे के काले धब्बे लहसुन रागड़ने से धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं। किसी भी प्रकार के दाग-धब्बे दूर करने में लहसुन लाभदायक है। सौंदर्यवर्धक के रूप में लहसुन का प्रयोग 'अमृत' है।  
**घाव के सड़ने या कीड़े पड़ने पर**  
शरीर पर कहीं घाव होने पर लहसुन का रस लगाने पर घाव जल्दी ठीक हो जाता है, घाव में कीड़े नहीं पड़ते हैं।  
**गुम चोट**  
गुम चोट में भी लहसुन लाभकारी है। लहसुन की तुर्रियों को नमक के साथ पीसकर गुम चोट वाले स्थान पर बांधने से लाभ होता है।  
**नोट**  
तीन वर्ष से कम आयु के शिशु को लहसुन नहीं देना चाहिए, किसी भी रोग के लिए लहसुन का प्रयोग करने के लिए किसी चिकित्सा विशेषज्ञ की सलाह लेना हितकर होगा।  
**लहसुन के अन्य प्रयोग**  
जहरीले कीड़े के काटने पर भी लहसुन का रस लगाने से विष का प्रभाव दूर हो जाता है।  
गले की ग्रंथियों की सूजन में लहसुन चबाकर खाने से सूजन दूर हो जाती है।  
कुकुर खांसी, काली खांसी, फेफड़ों से खून आने पर लहसुन की कलियाँ चूसने से लाभ होता है।  
लहसुन खाने से निमोनिया में भी आराम होता है।  
पीलिया में भी लहसुन का प्रयोग लाभकारी है।  
लहसुन को तेल में पकाकर उस तेल को ठंडाकर मालिश करने से त्वचा की खुजली मिट जाती है और त्वचा ठीक हो जाती है।  
मिर्गी की बेहोशी दूर करने के लिए लहसुन के रस को नाक में टपकाना चाहिए।  
लहसुन का नियमित सेवन बुढ़ापे को दूर रखता है।  
लहसुन मेधाशक्ति को बढ़ाता है और नेत्रों के लिए भी हितकर है।  
लहसुन में विद्यमान एलाइसिन, ऐंजोन तथा गंधक तत्व शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करता है।

## केला + दूध + शहद का मिश्रण पुरुषों की स्टैमिना, ताकत और ऊर्जा बढ़ाने में काफी असरदार माना जाता है।

## केला + दूध + शहद से मर्दाना स्टेमिना बढ़ाएँ!



**ऊर्जा बढ़ाए** **ताकत बढ़ाए** **हार्मोन वेलैस**

## डीवॉर्मिंग (कृमिरोधी)

10 फरवरी को देश भर में 'राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस' (National Deworming Day) मनाया जाता है। इसके माध्यम से बच्चों के संपूर्ण स्वास्थ्य, पोषण संबंधी स्थिति, शिक्षा और जीवन गुणवत्ता को बेहतर बनाया जा सकता है। इस दिवस का शुभारंभ स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में किया गया था। इस दिवस का उद्देश्य सरकारी/सरकारी सहायता प्राप्त/निजी स्कूलों व आंगनबाड़ी

केंद्रों के माध्यम से 1 से 19 वर्ष तक के सभी बच्चों को कृमि मुक्त करना है। गौरतलब है कि संपूर्ण विश्व में कृमि संक्रमण से सर्वाधिक प्रभावित बच्चे भारत में ही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने वर्ष 2014 में यह अनुमान लगाया था कि भारत में 1-14 वर्ष के आयु वर्ग वाले 22 करोड़ से भी अधिक बच्चों को उससे खतरा है। जातव्य है कि कृमि मनुष्य की आंतों में रहते हैं और शरीर के लिए जरूरी पोषण तत्वों को नष्ट कर देते हैं।



मिश्रण कैसे, कब और क्यों लेना है — सब आसान भाषा में समझे, केला + दूध + शहद से स्टैमिना कैसे बढ़ती है?  
1. ऊर्जा बढ़ाता है  
\* केला → प्राकृतिक कार्बोहाइड्रेट (तुरंत एनर्जी)  
\* दूध → प्रोटीन व कैल्शियम (मसल स्ट्रेंथ)  
\* शहद → नेचुरल शुगर (थकान कम)  
इससे शरीर जल्दी थकता नहीं और सहनशक्ति बढ़ती है।  
2. मसल रिकवरी बेहतर करता है दूध

का प्रोटीन और केले का पोटेसियम एक्सरसाइज या मेहनत के बाद मसल को जल्दी ठीक करता है  
3. हार्मोन वेलैस में मदद नियमित सेवन से टेस्टोस्टेरोन को सपोर्ट मिलता है, जिससे पुरुष शक्ति में सुधार होता है, सही तरीका (बहुत जरूरी)  
**सामग्री**  
\* 1 पका केला  
\* 1 गिलास गुनगुना या सामान्य दूध  
\* 1 चम्मच शुद्ध शहद  
बनाने की विधि तीनों को अच्छे से मिलाकर (ब्लेंडर या हाथ से) कब लें? सुबह खाली पेट — सबसे

अच्छा या रात को सोने से 1 घंटा पहले कितने दिन में असर ?  
\* 7-10 दिन → ऊर्जा में फर्क  
\* 3-4 हफ्ते → स्टैमिना और ताकत में सुधार  
**ध्यान रखने वाली बातें**  
\* बहुत ज्यादा शहद न डालें  
\* बहुत ठंडा दूध न लें  
\* डायबिटीज हो तो डॉक्टर से पूछें  
\* असर और बढ़ाने के लिए हफ्ते में 3-4 दिन हल्की एक्सरसाइज  
\* पर्याप्त नींद  
\* तनाव कम रखें

# धर्म अध्यात्म



## शनि देव और बूढ़ी माई की ममता



पिकी कुंडू

वृद्धा की परीक्षा लेने और उसे दर्शन देने का मन बनाया। वे एक सांवले, सुंदर बालक का रूप धारण कर उस बुढ़िया की कुटिया के बाहर बैठ गए। बालक को भूखा और प्यासा देखकर उस वृद्धा को मातृत्व जाग उठा। उसने बालक को अपनी गोद में बिठाया और बड़े प्रेम से अपने हाथों से रोटियां खिलाने लगी (जैसा कि आप चित्र में देख रहे हैं)।

3. शनि देव का वरदान जब वृद्धा बालक को खाना खिला रही थी, तब उसने देखा कि बालक के शरीर से एक दिव्य चमक निकल रही है। बालक ने मुस्कुराते हुए कहा, रमाता, लोग तो मुझसे डरते हैं, पर तुम मुझे इतने प्रेम से भोजन करा रही हो? तुम्हें मुझसे कुछ चाहिए नहीं? र

\* वृद्धा ने उत्तर दिया, रबेटा, मुझे कुछ नहीं चाहिए। बस तू खुश रहे और तेरी कृपा सब पर

बनी रहे।  
\* वृद्धा को इस निस्वार्थ भावना को देखकर शनि देव अपने असली रूप में प्रकट हुए। उन्होंने कहा — “माता, जो भी भक्त मुझे इस कोमल भाव से याद करेगा, मैं उसके जीवन के सारे कष्ट और 'साढ़ेसाती' के दुख हर लूंगा।”

प्रभु का स्वरूप: चित्र में शनि देव के हाथ में त्रिशूल और गदा है, जो सुरक्षा और न्याय का प्रतीक है।

काक (कौआ): शनि देव का वाहन 'कौआ' भी पास में बैठा है, जो यह दर्शाता है कि जहाँ श्रद्धा होती है, वहाँ पूरी सृष्टि सेवा में उपस्थित रहती है।

प्रेम का संदेश: यह कथा और चित्र यह संदेश देते हैं कि शनि देव 'क्रूर' नहीं बल्कि 'न्यायप्रिय' हैं। वे केवल कर्मों का फल देते हैं, लेकिन प्रेम और भक्ति से उन्हें भी जीता जा सकता है।



## भैरव बाबा को कालयुग का रक्षक

पिकी कुंडू

भैरव बाबा की शक्ति “अदृश्य भयों, नकारात्मक ऊर्जा और बाधाओं” को काटने वाली मानी गई है।

- भैरव = शिव का उग्र रूप भैरव, भगवान शिव का वह रूप है, जो दुष्ट शक्तियों का नाश करता है और भक्त की रक्षा करता है।
- भैरव + शक्ति = \*सुरक्षा \*जगरूकता \*अदृश्य खतरों से रक्षा \*तांत्रिक श्रेयों में कहा गया है — “शक्ति बिना भैरव अधूरा, भैरव बिना शक्ति निस्तेज।”
- क्यों शनिवार विशेष है? हिन्दू कलेंडर के अनुसार: मार्गशीर्ष और पौष के शनिवार भैरव उपासना का सबसे ऊर्जावान समय होते हैं। इन दिनों लोग: \*सरसों का तेल दीप \*नारियल \*कालेतिल अर्पित करते हैं। 4. प्रसिद्ध भैरव मंदिरों का महत्व: \*काशी—कालभैरव मंदिर: “Kashi Guardian” कहा जाता है। \*उज्जैन—कालाभैरव: यहाँ का मंदिर-अफगं पारंपरिक विश्व प्रसिद्ध है। \*कोटि भैरव—जम्मू: रक्षण शक्ति के लिए प्रसिद्ध।



\*इन मंदिरों में शनिवार को भक्तों की भीड़ कई गुना बढ़ जाती है।  
मुख्य संदेश: भैरव बाबा = भय, बाधा, नकारात्मकता—सबका अंत। जहाँ भैरव है, वहाँ सुरक्षा है।



## शनि महाराज की कृपा प्राप्त करने का सबसे सुगम और सटीक उपाय है, हनुमानजी महाराज की भक्ति

### आधी साड़ी के बदले हजारों गज कपड़ा, जाने कर्म का फल कैसे बढ़ता और मिलता है

पिकी कुंडू

द्रोपदी यमुना स्नान के लिए गई। नहाते समय उसकी दृष्टि कुछ दूर स्नान करते एक साधु पर पड़ी। उनके शरीर पर केवल एक लंगोटी मात्र थी। दूसरी लंगोटी बदलने के लिए किनारे पर रखी थी। पर हवा का झोंका आया और वह दूसरी लंगोटी उड़कर पानी में बह गई। दुर्भाग्य से भीगी हुई लंगोटी भी पुराने होने के कारण उसी समय फट गई। तब दहकने में भी अड़चन खड़ी हो गई।

प्रकाश फैलने लगा था। स्नान करने वालों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। साधु का असमंजस बढ़ा। वह निर्लज्ज बनकर कैसे खड़ा रहे? उसने कुछ दूर पर उगी एक छोटी सी झाड़ी के नीचे अपने को छिपा लिया। जब रात हो जाए तब अंधेरे में अपने स्थान पर जाने का उसका इरादा था।

द्रोपदी ने यह सारा दृश्य देखा और साधु की कठिनाई को समझा। उसने सहायता करने की बात सोची। उसके पास दूसरी धोती न थी। सो, आधी फाड़ कर अपना शरीर किसी प्रकार ढक लिया और से आधी को लेकर उस झाड़ी के समीप पहुंची जहाँ निर्वस्त्र साधु छिपा हुआ था।

द्रोपदी बोली- पिताजी! आपकी कठिनाई को मैंने समझा है। अपनी आधी साड़ी फाड़ कर लाई हूँ। इससे आप अपना तन ढकें और घर चले जाएं। आधी से मेरा भी काम चल गया है।

साधु की आंखों में आंसू आ गए। उसने कपड़े के टुकड़े को ले लिया, पहना और घर चला गया। मन ही मन आशीर्वाद देता गया कि, भगवान सदा तुम्हारी लज्जा को ढके रहे।

बात बहुत पुरानी हो गई। द्रोपदी को पांडव जुएं में हार गए। दुःशासन उसे भरी सभा में नंगी करने के लिए उतारू हो गया। द्रोपदी के अपशब्दों का बदला लेने के लिए वही सूझ सूझी थी।

द्रोपदी ने इस विकट संकट में भगवान को पुकारा, जो शेष शै्या पर सोए थे। नारद ने उन्हें जगाकर कहा- भक्तों को पुकार सुनिए। उसकी सहायता का प्रबंध कीजिए!

उनींदी आंखों से भगवान ने कहा- रना मैं किसी की सहायता करता हूँ, ना हैरानी में डालता हूँ। सभी अपने अपने कर्मों का फल भोगते हैं। द्रोपदी का कोई पिछला पुण्य हो तो पाता लगाओ। उसके पुण्य होंगे तो बदला मिल जाएगा।

नारद ने हिसाब की बही देखी, विदित हुआ कि द्रोपदी ने किसी साधु को अपनी आधी साड़ी फाड़ कर दान दी थी। वह टुकड़ा अब ब्याज समेत बढ़ते बढ़ते गड़द जितना हो गया है।

भगवान ने कहा- हम किसी के पुण्य का प्रतिफल समय पर क्यों नहीं देते?

गरुड़ पर चढ़कर वस्त्रों का गड्ढा लिए कौरवों की सभा के समीप पहुंचे। दुःशासन वस्त्र खींचता गया। भगवान ऊपर से उसकी पूर्ति करते गए। खींचने वाला थक गया। वस्त्र बढ़ता रहा, द्रोपदी की लाज बच गई। उसे आधी साड़ी के बदले हजारों गज कपड़ा मिल गया।

तो यदि मनुष्य का स्वयं कुछ किया ना हो, तो स्वयं विधाता भी उसकी सहायता नहीं कर सकता।

पिकी कुंडू

आज हम हनुमानजी और शनि महाराज के एक प्रसंग का स्वाध्याय करेंगे, तुलसीदासजी कहते हैं- रसकंते ते हनुमान छुड़ावैर शनि को हम संकट कहते हैं, एक बार हनुमानजी पहाड़ की तलहटी में बैठे थे तभी शनि महाराज हनुमानजी के सिर पर आ गये, हनुमानजी ने सिर खुजाया लगता है कोई कीड़ा आ गया, हनुमानजी ने पूछा तू है कौन? शनिदेव ने कहा- मैं शनि हूँ, मैं संकट हूँ, हनुमानजी ने कहा मेरे पास क्या आये हो? शनि बोले मैं अब आपके सिर पर निवास करूँगा।

हनुमानजी ने कहा- अरे भले आदमी, मैंने ही तुझे रावण के बंधन से छुड़वाया था और मेरे ही सिर पर आ गये, बोले हीं क्यो छुड़ाया था आपने, इसका फल तो आपको भोगना पड़ेगा, अच्छा कितने दिन रहना है? शनि बोला साढ़े सात साल और अच्छी खातिरदारी हो गयी तो ढाई साल और, हनुमानजी ने कहा भले आदमी किसी और के पास जाओ।

मैं भला श्री रामजी का मजदूर आदमी, सुबह से शाम तक सेवा में लगा रहता हूँ, मुश्किल पड़ जाएगी, तुम भी दुःख भोगेंगे और मुझे भी परेशान करोगे, शनिदेव ने कहा मैं तो नहीं जाऊँगा, हनुमानजी बोले कोई बात नहीं तुम ऐसे नहीं मानोगे, हनुमानजी ने एक बहुत बड़ा पत्थर उठाया और अपने सिर पर रखा,

पत्थर शनिदेव के ऊपर आ गया, शनि महाराज बोले यह क्या कर रहे हो? बोले मैंने कहा था कि चटनी बनाने के लिए एक बटना ले आना वह ले जा रहा हूँ, हनुमानजी ने जैसे ही पत्थर को उठाकर मचका दिया तो शनि चीं बोलने लगा, दूसरी बार किया तो बोले क्या करते

हो? बोले चिन्ता मत करो, शनिदेव बोले- छोड़ो- छोड़ो, हनुमानजी बोले नहीं अभी तो साढ़े सात मिनट भी नहीं हुये है, तुम्हें तो साढ़े सात साल रहना है।

जब दो-तीन मन्के ओर दिये तो शनिदेव तिलमिला गये, शनिदेव ने कहा भैया मेरे ऊपर कृपा करो, बोले ऐसी कृपा नहीं करूँगा, बोले वरदान देकर जाओ, शनि का ही दिन था, हनुमानजी ने कहा कि तुम मेरे भक्तों को सताना बंद करो, तब शनि ने कहा कि हनुमानजी के जो भी भक्त शनिवार को आपका स्मरण करेगा आपके चालीसा का पाठ करेगा मैं उसके यहाँ नहीं, बल्कि उसके पड़ोसी के वहाँ भी कभी नहीं जाऊँगा, उसका संकट दूर हो जायेगा।

फिर शनिदेव ने कहा कि हनुमानजी एक कृपा आप भी मुझ पर कर दीजिये, हनुमानजी बोले क्या? शनिदेव बोले- आपने इतनी ज्यादा मेरी हड्डियां चरमरा दी हैं, इसलिये थोड़ी तेल मालिश हो जाये तो बड़ी कृपा हो जाये, हनुमानजी ने कहा कि ठीक है मैं अपने भक्तों को कहता हूँ कि शनिवार के दिन जो शनिदेव को तेल चढ़ायेगा उसके संकट मैं स्वयं दूर करूँगा।

दूसरा संकट क्या है? त्रिताप ही संकट है, दैविक, वैहिक तथा भौतिक ताप यही संकट है और इसकी मुक्ति का साधन क्या है? केवल भगवान् का सुमिरन, राम राज बैठे त्रैलोक्य, हरपित भये गये सब सोकार रामराज कोई शासन की व्यवस्था का नाम नहीं है, रामराज मानव के स्वभाव की अवस्था का नाम है, समाज की दिव्य अवस्था का नाम है।

आज कहते हैं कि हम राम राज लायेगे, तो भाई-बहनों फिर राम कहाँ से लायेंगे? नहीं- नहीं बोलने लगा, दूसरी बार किया तो बोले क्या करते



कहते हैं, रामराज्य की अवस्था क्या है? रसब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीतीर यह रामराज्य की अवस्था है, व्यवस्था कैसी भी हो अगर, व्यक्तिओं की और समाज की यह अवस्था रहेगी तो शासन में कोई भी वैदो राज्य राम का ही माना जायेगा,

राम मर्यादा है, धर्म है, सत्य है, शील है, सेवा है, समर्पण है, राम किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, राम वृत्ति का नाम है, स्वरूप का नाम राम नहीं है बल्कि स्वभाव का नाम राम है, इस स्वभाव के जो भी होंगे वे सब राम ही कहलायेंगे, वेद का, धर्म की मर्यादा का पालन हो, स्वधर्म का पालन हो, यही रामराज्य है।

स्वधर्म का अर्थ हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध धर्म का पालन नहीं है, स्वधर्म का अर्थ है जिस-जिस का जो-जो धर्म है, पिता का

मोह और भय से, भूतकाल का भय ऐसा क्यों कर दिया, ऐसा कर देता तो मोह होता है।

वर्तमान में जो कुछ सुख साधन आपके पास है यह बना रहे, इसको पकड़कर बैठना यह मोह और भय होता है, भविष्यकाल में कोई छीन न ले कोई लूट न ले, भविष्य का भय की मेरा क्या होगा? भाई-बहनों आपको भविष्य की चिंता छोड़ देना, क्योंकि, हनुमानजी सब कालों में विधमान हैं, रचार्चो जुग प्रताप तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारार हनुमानजी तो अमर हैं।

चारों युगों में हैं सम्पूर्ण संकट जहाँ छूट जाते हैं शोक, मोह, भय वह है भगवान् श्री रामजी की कथा, कथा में हनुमानजी रहते हैं, अगर वृत्तियाँ छूटें तो हनुमानजी छुड़ा देंगे, बिल्कुल मानस के अंत में पार्वतीजी ने प्रमाणित किया है, रसुनि भुसुंडि के बचन सुहाये, हरपित खगपति पंख फुलायेर तीनों संकट अगर दूर चले जाते हैं, या छोड़ देते हैं, मनुष्य को तो वह श्रीराम की कृपा मिल जाती है, और उस कृपा से मोह का नाश होता है,

बिनु सतसंग न हरि कथा, तेहि बिनु मोह न भाग।

मोह गाएँ बिनु राम पद, होय न दूढ़ अनुराग।।

भगवत कथा, सत्संग यह मोह का नाश करती है, संत-मिलन संत-दर्शन शोक को दूर करता है रतोहि दैखि वेग शीतल भई छातीर जैसे हनुमानजी मिले तो जानकीजी का हृदय शान्त हो गया, शीतल हो गया, हनुमानजी के प्रति श्रद्धा रखियें, श्रद्धा से भय का नाश होता है, आपके मन में यदि भगवान् के प्रति श्रद्धा है तो आप कभी किसी से भयभीत नहीं होंगे।

॥ जय सियाराम जी ॥  
॥ ॐ नमः शिवाय ॥

## “न राज-मुकुट का मोह था, न वन का कोई त्रास, पिता के एक वचन हेतु, स्वीकार किया वनवास।”

पिकी कुंडू

उन्होंने महाराज दशरथ को पिछले देवासुर संग्राम के समय दिए गए उन दो वचनों की स्मृति दिलाई, जो आज अयोध्या के भाग्य का निर्णय करने वाले थे।

“जिस जिह्वा पर सरस्वती, कभी करती थीं विश्राम, उसी ने आज मांग लिया, अपने ही सुत का वन-धाम।”

कैकेयी ने निन्दुरता की परकाष्ठा पार करते हुए दो वर मांगे - प्रथम, भरत का राज्याभिषेक और द्वितीय, राम को चौदह वर्षों का वनवास। महाराज दशरथ के लिए यह वज्रपात था। एक ओर पुत्र का मोह था, तो दूसरी ओर रघुकुल की वह शाश्वत परंपरा—एराण जाई पर वचन न जाई र धर्मसंकट में फंसे पिता का हृदय विदीर्ण हो गया, किन्तु वे वचन से बंधे थे।

“धर्म और स्नेह के रण में, एक पिता का हृदय हार गया, कुल की रीत निभाने में, जीवन का सब सुख वार गया।”

रानी कैकेयी की प्रिय दासी मंथरा की इर्ष्या ने एक विनाशकारी भूमिका निभाई। मंथरा ने रानी के मन में यह भय बिठा दिया कि राम के राजा बनने ही उनका और भरत का अस्तित्व शून्य हो जाएगा। जो कैकेयी राम पर अपने प्राणों से अधिक स्नेह बरसाती थीं, उनकी बुद्धि पर कुमति का पर्दा पड़ गया। कोप भवन में जाकर

भवन निर्मित होना था।

“मुस्कुरा कर पी लिया, जिसने विष का प्याला, वही राम बना जग में, म यौदा का रखवाला।”

श्रीराम के वनगमन में सीता और लक्ष्मण का त्याग भी अतुलनीय है। जनकसुता सीता ने महलों के सुख को तुच्छ मानकर पति के चरणों की छाया को चुना। उधर, भ्राता लक्ष्मण ने सेवाधर्म को सर्वोपरि रखते हुए नौद और चैन का त्याग कर दिया। अयोध्या आंसुओं में डूबी रह गई और तीन तपस्वी वन के कंठीले पथ पर अग्रसर हो गए।

“महलों के सुख शै्या को, तिनके सा जिसने तोड़ा, धन्य वो वैदेही जिसने, कभी न पति का साथ छोड़ा।”

लौकिक दृष्टि से यह एक दुःखद घटना थी, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से यह अनिवार्य था। यदि राम वन न जाते, तो ऋषियों को अभय कौन देता? रावण के अहंकार का अंत कैसे होता? वनवास की अग्नि में तपकर ही राम का व्यक्तित्व निखरा। उन्होंने संसार को सिखाया कि विपत्ति में धैर्य और सत्ता के मद में विनम्रता कैसे रखी जाती है। प्रभु श्रीराम ने सिखाया कि कैसे सोने सा तपकर ही कुंदन, जग में अनमोल बनता है, कष्टों की भट्टी में ही तपकर ईसान का चरित्र निखरता है।

उन्होंने महाराज दशरथ को पिछले देवासुर संग्राम के समय दिए गए उन दो वचनों की स्मृति दिलाई, जो आज अयोध्या के भाग्य का निर्णय करने वाले थे।

“जिस जिह्वा पर सरस्वती, कभी करती थीं विश्राम, उसी ने आज मांग लिया, अपने ही सुत का वन-धाम।”

कैकेयी ने निन्दुरता की परकाष्ठा पार करते हुए दो वर मांगे - प्रथम, भरत का राज्याभिषेक और द्वितीय, राम को चौदह वर्षों का वनवास। महाराज दशरथ के लिए यह वज्रपात था। एक ओर पुत्र का मोह था, तो दूसरी ओर रघुकुल की वह शाश्वत परंपरा—एराण जाई पर वचन न जाई र धर्मसंकट में फंसे पिता का हृदय विदीर्ण हो गया, किन्तु वे वचन से बंधे थे।

“धर्म और स्नेह के रण में, एक पिता का हृदय हार गया, कुल की रीत निभाने में, जीवन का सब सुख वार गया।”

रानी कैकेयी की प्रिय दासी मंथरा की इर्ष्या ने एक विनाशकारी भूमिका निभाई। मंथरा ने रानी के मन में यह भय बिठा दिया कि राम के राजा बनने ही उनका और भरत का अस्तित्व शून्य हो जाएगा। जो कैकेयी राम पर अपने प्राणों से अधिक स्नेह बरसाती थीं, उनकी बुद्धि पर कुमति का पर्दा पड़ गया। कोप भवन में जाकर





## वैलेंटाइन डे विशेष: प्रेम का 'बाजारीकरण': जहाँ शरीर मंजिल और भावनाएं मुसाफिर हैं

उमेश कुमार साहू

जब समय की रेत पर सभ्यताएं अपने निशान छोड़ती हैं तो केवल वही गाथाएं अमर होती हैं जो 'प्रेम' की स्याही से लिखी गई हों लेकिन आज, जब हम 21वीं सदी के तीसरे दशक के मुहाने पर खड़े हैं तो 'प्रेम' शब्द अपनी मौलिकता खोता नजर आ रहा है। 14 फरवरी को तारीख अब हृदय की धड़कन कम और बाजार का कोलाहल ज्यादा सुनाती है। जिस हम आज की भाषा में 'डेटिंग' या 'रिलेशनशिप' कहते हैं, क्या वह वास्तव में वह प्रेम है जिसकी युधि से सदियों पहले कती थी? आज प्रेम की कोमलता कहीं खो गई है और उसकी जगह एक यांत्रिक प्रदर्शन ने ले ली है।

### देह की परिधि और आत्मा का सनाटा

आधुनिकता ने हमें आजादी तो दी, लेकिन उस आजादी में हम 'संयम' खो बैठे। आज के दौर की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि हमने 'प्रेम' और 'काम' (Lust) के बीच की उस पवित्र रेखा को धुंधला कर दिया है जो कभी मर्यादा कहलाती थी। आज प्रेम का आरंभ और अंत अक्सर 'देह' पर जाकर रूक जाता है। आज आकर्षण केवल शारीरिक होता है, तो वह तब तक टिकता है जब तक सामने वाली देह नवीन है। जैसे ही वह नवीनता समाप्त होती है, तथाकथित 'प्रेम' भी दम तोड़ देता है।

हकीकत यह है कि देह केवल एक माध्यम है, मंजिल नहीं। वास्तविक प्रेम वह है जहाँ दो आत्माएं एक-दूसरे के मौन को सुनने लगती हैं। प्रेम वह नहीं जो बिस्तर की सिलवटों में दम तोड़ दे, बल्कि प्रेम वह है जो दो व्यक्तियों को एक-दूसरे का 'सर्वश्रेष्ठ संस्करण' बनाने में मदद करे। जहाँ त्याग बोझ न लगे और समर्पण गुलामी न लगे, वहीं प्रेम की पहली कोपल फूटती है।

### समर्पण का विलुप्तीकरण और 'अहं' का विस्तार

पुराने साहित्य और लोककथाओं में प्रेम का पर्यायवाची 'त्याग' हुआ करता था, आज वह 'अधिकार' बन गया है। त्याग और समर्पण जैसी भावनाएं आज के 'इंस्टेंट' युग में विलुप्त होती जा रही हैं। हम जिससे प्रेम करते हैं, हम उसे अपनी संपत्ति (Possession) समझने लगते हैं। रतुम केवल मेरी होर से लेकर हमें तुम्हारे बिना मर जाऊँगा तक के दावे प्रेम नहीं, बल्कि एक तरह की मानसिक असुरक्षा है।

प्रेम तो आजाद करने का नाम है। आज समर्पण की जगह 'अपेक्षाओं' (Expectations) ने ले ली है। हम प्रेम इसलिए करते हैं ताकि कोई हमें खुश रख सके, जबकि प्रेम का असली आनंद तो दूसरे की खुशी में अपनी खुशी

दूबने में है। जब प्रेम में 'ध्यान' जुड़ता है, तब वह शाश्वत बनता है। बिना ध्यान के प्रेम अक्सर ईर्ष्या, क्रोध और असुरक्षा में बदल जाता है।

"प्रेम गली अति सांकरि, तामें दोन समाहिं।।"

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।।"

कबीर का यह दर्शन स्पष्ट करता है कि जब तक 'मैं' (अहंकार) रहेगा, तब तक प्रेम का प्रवेश असंभव है। प्रेम में खुद को मिटाना पड़ता है, दूसरे को पाना नहीं पड़ता।

### बाजारवाद का षड्यंत्र और भावनाओं की नीलामी

आज वैलेंटाइन डे एक ऐसा मेला बन गया है जहाँ भावनाओं की नीलामी होती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने युवा मन में यह बात बँटा दी है कि प्रेम की गहराई आपके द्वारा दिए गए तोफे की कीमत से मापी जाती है। यदि आपने हीरा नहीं खरीदा, तो आपका प्रेम अधूरा है। विज्ञापनों ने प्रेम को एक 'कमोडिटी' बना दिया है जिसे खरीदा जा सकता है।

लोकन्या कोई बाजार वह 'सुकून' बेच सकता है जो एक-दूसरे का हाथ थामकर लंबी खांमोश सैर में मिलता है? क्या कोई डायमंड उस 'भरोसे' की चमक की बराबरी कर सकता है जो विपरीत परिस्थितियों में साथ खड़े होने से आती है? आज लोग एक-दूसरे के साथ समय बिताने से ज्यादा, साथ में फोटो खींचकर सोशल मीडिया पर डालने को उत्सुक रहते हैं। हम 'फ्लिक इमेज' के लिए प्रेम कर रहे हैं, अहसास के लिए नहीं।

### वैलेंटाइन: बलिदान की विस्मृत कथा

हम हर साल यह दिन मनाते हैं लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि संत वैलेंटाइन ने प्रेम के लिए अपनी जान दी थी। तीसरी सदी के रोम में सम्राट क्लाउडियस ने सैनिकों के विवाह पर पाबंदी लगा दी थी। संत वैलेंटाइन ने उस क्रूर सत्ता के खिलाफ जाकर प्रेमियों के विवाह कराए और मृत्युदंड स्वीकार किया। उनका बलिदान शारीरिक सुख के लिए नहीं, बल्कि उस 'आध्यात्मिक जुड़ाव' के लिए था जिसे विवाह जैसा पवित्र बंधन पुष्ट करता है। आज का युवा वर्ग यदि उनके त्याग को समझ ले, तो वासना और प्रेम का अंतर स्वयं स्पष्ट हो जाएगा।

### तकनीकी युग में 'इंस्टेंट प्रेम का खतरा

हम '5G' के युग में जी रहे हैं जहाँ सब कुछ जल्दी चाहिए। यहाँ वह 'प्रीतीक्षा' खत्म हो गई है जो प्रेम को परिपक्व बनाती थी। पहले प्रेम में 'तप' होता था। आज 'स्वाइप राइट' करते ही साथी मिल जाता है और एक छोटी सी अस्थायी प्रेम 'ब्लॉक' कर दिया जाता है। धैर्य का अभाव प्रेम का सबसे बड़ा दुश्मन है। प्रेम कोई

रेडीमेड वस्तु नहीं है, यह तो एक बीज है जिसे विश्वास की खाद और धैर्य के पानी से सींचना पड़ता है। जो प्रेम जितनी जल्दी परवान चढ़ता है, वह उतनी ही जल्दी राख भी हो जाता है।

### मर्यादा: प्रेम की सुरक्षा दीवार

समाज में आज प्रेम के नाम पर जो उच्छ्वेलता बढ़ी है, उसने प्रेम की गरिमा को ठेस पहुँचाई है। मर्यादा वह तटबंध है जो प्रेम की नदी को विनाशकारी बाढ़ बनने से रोकता है। बिना मर्यादा के प्रेम वासना की वह आग है जो प्रेम करने वालों को ही जलाकर खाक कर देती है। पुराने समय में प्रेम को 'इबादत' कहा जाता था। इबादत में पवित्रता अनिवार्य है। जब तक हम दूसरे के व्यक्तित्व का सम्मान नहीं करेंगे, तब तक हमारा प्रेम केवल एक स्वार्थसिद्ध करने का जरिया रहेगा।

### अशुण्णता की ओर: कैसे बचाएं प्रेम को?

आज की पीढ़ी को यह समझना होगा कि देह नखर है और देह पर आधारित आकर्षण भी अस्थायी है। प्रेम की अशुण्णता बनाए रखने के लिए हमें कुछ बुनियादी बदलाव करने होंगे:

- संवाद की कोमलता: तकनीक के बजाय सीधे दिल से बात करें। शब्दों में वही माधुर्य लाएं जो हमारी संस्कृति की पहचान थी।

- भीतरी सुंदरता की खोज: चेहरे की चमक वक्त के साथ फीकी पड़ जाएगी, लेकिन स्वभाव की मिठास ताउम्र रहेगी।

- निस्वार्थता: प्रेम को 'लेने' की नहीं, 'देने' की प्रक्रिया बनाएं।

### प्रेम के दिव्य और पवित्र प्रकाश की ओर बढ़ें

इस 14 फरवरी को, गुलाब के उस फूल को देने से पहले खुद से पूछिए - क्या आप उस व्यक्ति की आत्मा के अंधेरों को खींचकर करने के लिए तैयार हैं? क्या आप उसके बुढ़ापे, उसकी बीमारी और उसकी असफलताओं में भी उतने ही प्रेम से साथ खड़े रहेंगे?

प्रेम कोई एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि एक 'उपासना' है। यह देह के बाजार से निकलकर रूह के गलियारों में टहलने का नाम है। जिस दिन हम देह की भूख से ऊपर उठकर आत्मा की प्यास को समझ लेंगे, उस दिन वैलेंटाइन डे सार्थक होगा। प्रेम वह प्रकाश है जो अंधेरी से अंधेरी राह को रोशन कर सकता है। आइए, इस बार 'वासना' के अंधेरे को पीछे छोड़ 'प्रेम' के दिव्य और पवित्र प्रकाश की ओर बढ़ें क्योंकि अंततः, संसार में वही जीवित रहता है जिसने निस्वार्थ प्रेम करना सीखा है।

## वैलेंटाइन डे की 'आड़' में गुमनाम होती जवानों की शहादत

संतोष कुमार तिवारी

जहां देश में युवक और युवती आपसी प्रेम के इजहार को लेकर बड़े ही बेसब्री से 14 फरवरी का इंतजार करते हैं और पूर्व 7 फरवरी से 14 फरवरी तक विभिन्न दिवस के रूप मनाया जाता है लेकिन देश के युवा वैलेंटाइन डे के चक्कर में देश के वीर जवानों की शहादत को ध्यान में न रखकर केवल प्रेम और मोहब्बत के झूठे जंगल में खुद को बर्बाद कर रहे हैं।

वैलेंटाइन डे के नाम पर जिस तरह युवक और युवती खुद को प्रेम के नाम पर बर्बाद कर रहे हैं जो कहीं न कहीं देश के भविष्य को लेकर चिंताजनक है। प्रेम के नाम पर केवल मौज मस्ती और दिखावा युवाओं को पथभ्रष्ट कर रहा है। जहां देश में लोग वीर जवानों की कुर्बानी को याद कर उन्के कार्यों को नमन कर रहे हैं, पुलवामा में हुए हमले के दौरान शहीद हुए जवानों को लोग याद करते हैं और 14 फरवरी को शहीदों की याद में 'ब्लैक डे' मनाया जाता है लेकिन देश के भविष्य युवा वीरों की शहादत को याद करने की जगह भारतीय संस्कृति को गंदा करने वाले वैलेंटाइन डे जैसे दिन पर मशगूल रहते हैं। आइये जानते हैं कि 14 फरवरी को ब्लैक डे क्यों मनाया जाता है?

14 फरवरी को भारत के इतिहास में 'ब्लैक डे' के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन 2019 में पुलवामा में हुआ हमला आतंकवाद का एक विनाशकारी रूप था जिसने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था। जम्मू-कश्मीर में जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का एक काफिला जम्मू से श्रीनगर की ओर जा रहा था। जैसे ही काफिला अवंतीपोरा के गोरीपोरा के पास पहुंचा, एक वाहन काफिले में शामिल बसों के बहुत करीब आ गया। सैनिकों की ओर से ड्राइवर को सुरक्षित दूरी बनाए रखने के लिए बार-बार चेतावनी दिए जाने के बावजूद वाहन ने आदेशों की अनदेखी करना जारी रखा।

एक भयावह क्षण में, वाहन बसों में से एक से टकरा गया जिससे एक बड़ा विस्फोट हुआ



जिसमें 40 बहादुर सैनिकों की जान चली गई। यह आतंकवादी हमला श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे अवंतीपोरा के गोरीपोरा में हुआ। सीआरपीएफ का काफिला, जिसमें 60 से अधिक सैन्य वाहन और लगभग 2,547 सैनिक शामिल थे, इस क्षेत्र से गुजर रहा था। विस्फोटकों से भरे एक वाहन ने सैन्य बसों में से एक को टक्कर मार दी। टक्कर के कारण एक बड़ा विस्फोट हुआ, जो इतना शक्तिशाली था कि कई किलोमीटर दूर तक सुना जा सकता था। विस्फोट इतना तीव्र था कि इसने आसपास के क्षेत्र को धुंएँ और आग के घने बादल में घेर लिया। दुःखद रूप से इस भीषण हमले में 40 से अधिक सैनिकों की जान चली गई।

पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने अवंतीपोरा में हुए विनाशकारी हमले की जिम्मेदारी ली। यह विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि काफिले में शामिल कई बसें बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थीं। इस हमले ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था। आतंकवाद के इस क्रूर कृत्य ने पूरे देश को शोक में डुबो दिया और सभी की निगाहें सरकार और सेना पर टिक गईं जो शहीद सैनिकों का बदला लेने के लिए एक मजबूत और निर्णायक जवाब का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। पुलवामा आतंकवादी हमले के ठीक 12 दिन बाद भारत ने 25 फरवरी 2019 की देर रात पाकिस्तान के बालाकोट पर जवाबी हवाई हमला किया। इस ऑपरेशन के दौरान, लगभग

300 पाकिस्तानी आतंकवादी मारे गए। इस मिशन में लगभग 2,000 भारतीय वायु सेना के जवानों ने भाग लिया और क्षेत्र में आतंकवादी शिविरों पर लगभग 1,000 किलोग्राम बम गिराए। यह ऑपरेशन पूरी गोपनीयता के साथ किया गया और पाकिस्तान को चौंका दिया गया।

इस निर्णायक कार्रवाई के बाद में बालाकोट एयर स्ट्राइक नाम दिया गया। बालाकोट हवाई हमले के दौरान, भारत के मिग-21 बाइसन लड़ाकू विमान ने एक पाकिस्तानी एफ-16 उड़ते को भी मार गिराया। हालाँकि, ऑपरेशन के दौरान, मिग-21 क्षतिग्रस्त हो गया और पाकिस्तान में दुर्घटनाग्रस्त हो गया जिसके परिणामस्वरूप विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान को राफ़िस्तानी सेना ने पकड़ लिया। इस कठिन परिस्थिति के बावजूद, अभिनंदन को 1 मार्च, 2019 को पाकिस्तान द्वारा रिहा कर दिया गया। उनकी बहादुरी के लिए भारत सरकार ने उन्हें प्रतिष्ठित 'वीर चक्र' से सम्मानित किया।

देश के वीर जवानों की शहादत पर यदि देश का युवा जिसके कंधे पर देश की जिम्मेदारी है, वह देशभक्ति से हटकर फर्जी प्रेम दिवस मनाने में जुटा हो तो सोचा जा सकता है कि हमारा देश कहाँ जा रहा है?

देश के युवाओं से अपील है कि आपके कंधे पर देश की जिम्मेदारी है और आप जिस क्षेत्र में हैं, उस काम को जिम्मेदारी से करें और राष्ट्रहित सर्वोपरि को ध्यान में रखकर कार्य करें। वैलेंटाइन डे के नाम पर जिस तरह देश के युवक और युवती अपने क्षणिक प्रेम के लिए भारतीय संस्कृति और संस्कार को लिलांजित दे रहे हैं और जवानों की शहादत गुमनाम हो रही है, वह सर्वथा अनुचित है। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे मजबूत संस्कृति है जो संस्कार से युक्त है। अतः देश के सभी युवक और युवती देश की संस्कार और संस्कृति पर गर्व करें और देश के लिए अपना बलिदान करने वाले वीर जवानों को हमेशा याद रखें और देश को एक मजबूत राष्ट्र बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाएं।

## सवर्ण समाज आ चुका है हाशिए पर- अलंकार अग्निहोत्री

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृंदावन। गोधूली पुरम स्थित श्रीहरिदास धाम में राष्ट्रीय ब्राह्मण सेवा संघ के संस्थापक पंडित श्री चंद्र लाल शर्मा की अध्यक्षता में यूजीसी एवं एफसी - एसटी एक्ट के विरोध में एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में बरेली के पूर्व सिटी मजिस्ट्रेट अलंकार अग्निहोत्री ने एलान किया कि सनातन अथवा सवर्ण समाज के नाम से एक राजनीति के पार्टी का गठन अतिशीघ्र किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सवर्ण समाज हासिए पर आ चुका है। वोट बैंक की राजनीति हावी है। इसलिए जिस तरह से अपना दल एवं अन्य दल अपने वोटर के मन मुताबिक चल रही हैं, और अन्य दलों के साथ मिलकर सरकार में भागीदार हो रहे हैं, इसी प्रकार अपनी एक अलग पार्टी बनाने की बहुत आवश्यकता है। आज वृंदावन से नई पार्टी का एलान कर दिया गया है। अति शीघ्र चुनाव आयोग से मिलकर अपनी पार्टी का गठन किया जाएगा।

वृंदावन कॉरिडोर के मुद्दे पर अलंकार अग्निहोत्री ने कहा कि यह केवल सरकार की मंशा है, कि इनको खजाना चाहिए। बांके बिहारी का मंदिर सेवापत्तों और ब्रजवासियों का है। सेवापत्तों के अनुसार ही संपूर्ण व्यवस्था होनी चाहिए।

राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य आनंद बल्लभ गोस्वामी एवं ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष महेश भारद्वाज ने कहा की यूजीसी तथा ऐसी



एसटी समाज पर कलंक का धब्बा है। बरेली के पूर्व सिटी मजिस्ट्रेट अलंकार अग्निहोत्री ने इस पीड़ा को समझा और इन्होंने अपने सिटी मजिस्ट्रेट के पद पर इस्तीफा दे दिया। अब हम लोगों को इस मुद्दे को बढ़ाना है।

डॉक्टर मनोज मोहन शास्त्री एवं स्वामी अतुल कृष्ण दास महाराज ने कहा के यूजीसी कानून हम किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेंगे। भले ही हमें सड़क पर उतरना पड़े।

श्रीमती नीलम गोस्वामी एवं प्रमोद गौतम ने कहा के यूजीसी कानून विश्वविद्यालय पर लागू होना इसका मतलब है के अब स्वर्ण विद्यार्थी विश्वविद्यालयों में प्रवेश के नाम से कतराएंगे, अभिभावक बालिकाओं के प्रवेश के नाम से डरेंगे।

पंडा सभा के अध्यक्ष श्याम सुंदर गौतम एवं गरीब एकता दल के अध्यक्ष विवेक महाजन ने कहा कि पहले ही स्वर्ण समाज एसटी, एसटी कानून को लेकर भयभीत है। इस पर यूजीसी

कानून हमारे बच्चों के लिए भयंकर सिद्ध होगा। इसलिए हम भी अलंकार अग्निहोत्री के साथ मिलकर एक नई पार्टी का गठन करेंगे।

इस अवसर पर पंडित सुरेश चंद्र शर्मा, रामनारायण ब्रजवासी, गोविंद नारायण शर्मा, उद्धव शर्मा, श्याम सरदार, अनमोल दीक्षित, राघव भारद्वाज, राम मूर्ति तिवारी, नरेंद्र पाठक, नीरज गौड़, तपेश पाठक, लाला व्यास, सुरेश, अजय बिहारी शर्मा, ममता गोस्वामी, डॉक्टर जमुना शर्मा, राखी गोस्वामी, प्रीति गोस्वामी, राधा मिश्रा, विवेक गौतम, सुनीता, प्रियव्रत शर्मा, पवन शर्मा, सुमन गोस्वामी, सीमा मिश्रा, योगेश योगीराज, अनुपम गौड़, विजय लक्ष्मी शर्मा, वंदना शर्मा, रमेश शर्मा, राजेश पाठक, सोनू पाठक, धीरेंद्र तिवारी, अरुण शर्मा, तपेश कृष्ण तिवारी, दीपू मोतीवाल, राजू, आकाश, हेमंत, राकेश पाठक, महंत प्रियशरण, कल्लू पहलवान आदि की उपस्थिति विशेष रही।

## आगरा में उद्योगपति को उगाही और जान से मारने की धमकी: मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने एफआईआर के आदेश

50-50 मैसेज और 40 कॉल प्रतिदिन, मानसिक उत्पीड़न का आरोप

आगरा। जूता उद्योग से जुड़े एक प्रतिष्ठित उद्योगपति द्वारा कथित उगाही, फर्जी बकाया दिखाकर मानसिक उत्पीड़न और जान से मारने की धमकी के आरोपों के मामले में अदालत ने सख्त रुख अपनाया है। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट न्यायालय, आगरा ने थाना सिकंदरा को आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर विधि अनुसार विवेचना करने के निर्देश दिए हैं।

क्या है मामला? मामले के अनुसार, एचके-एचआर इंटरनेशनल एक्सपोर्ट पार्क के संचालक एवं वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने अधिवक्ता अनिल अग्रवाल के माध्यम से अदालत में प्रार्थना पत्र दायर किया। उन्होंने बताया कि उनकी फर्म अरतनी स्थित एस्के सेल्स कॉर्पोरेशन से जूतों का माल क्रय करती रही है। दोनों पक्षों के बीच चल रहे लेन-देन का समायोजन 31 मार्च 2020 को कर लिया गया था, जिसके बाद कोई भी बकाया राशि शेष नहीं रही।

पीड़ित का आरोप है कि इसके बावजूद फर्म के अधिकार - सौरभ जैन, सुरेंद्र कुमार जैन और अंशुल जैन ने कथित रूप से धन उगाही के उद्देश्य से एक मोबाइल नंबर उपलब्ध कराया। इस नंबर से संस्था के कर्मचारियों को लगातार फोन कॉल और



संदेश भेजकर भुगतान के लिए दबाव बनाया गया तथा धमकियां दी गईं।

प्रार्थी के अनुसार, उनका लेन-देन आगरा की फर्म EsKay Enterprises और EsKay Sales Corporation से रहा था। संबंधित बकाया राशि 31 मार्च 2020 तक समायोजित कर समाप्त कर दी गई थी तथा आयकर अभिलेखों में भी इसका समुचित उल्लेख किया गया था। इसके बावजूद आरोप है कि इन फर्मों के साझेदारों - सौरभ जैन, सुरेंद्र कुमार जैन एवं अंशुल जैन ने कथित रूप से एक वसुली संस्था SUPPORT@CREDIT.QIN के माध्यम से दबाव बनाया शुरू किया।

प्रार्थी ने आरोप लगाया कि 21 नवंबर 2025 को सुबह लगभग 11:02 बजे एक कॉल के दौरान उनसे कथित रूप से अपद्र

भाषा का प्रयोग किया गया और भुगतान न करने पर 'घर से उठवा लेने' तथा जान से मारने की धमकी दी गई।

### कानूनी नोटिस के बाद भी नहीं रुकी कार्रवाई

प्रार्थी ने 15 अक्टूबर 2025 को सभी आरोपित पक्षों को विधिक नोटिस भेजा, जो 16 से 18 अक्टूबर के बीच प्राप्त भी हुआ। बावजूद इसके, कथित कॉल और संदेशों का सिलसिला जारी रहा। प्रार्थी का दावा है कि इस निरंतर दबाव के कारण वह गंभीर मानसिक तनाव और माइग्रेन से पीड़ित हो गए हैं।

### पुलिस में शिकायत के बाद न्यायालय की शरण

प्रार्थी द्वारा थाना सिकंदरा, पुलिस आयुक्त आगरा एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को डाक के माध्यम से

शिकायत भेजी गई, परंतु मुकदमा दर्ज न होने पर उन्होंने अदालत की शरण ली। प्रार्थनापत्र में भारतीय न्याय संहिता (BNS) की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत संज्ञेय अपराध का उल्लेख किया गया।

आरोप है कि उचित स्तर पर सुनवाई न होने पर पीड़ित ने न्यायालय की शरण ली। मामले की गंभीरता को देखते हुए अदालत ने थाना सिकंदरा को प्रार्थमिकी दर्ज कर निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करने के आदेश दिए हैं। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि प्रकरण में प्रथम दृष्टया संज्ञेय अपराध परिलक्षित होता है और विवेचना कराए जाने के लिए पर्याप्त आधार मौजूद है।

### अदालत का आदेश

माननीय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट मृत्युंजय श्रीवास्तव ने आदेश पारित करते हुए थाना सिकंदरा को निर्देशित किया कि प्रार्थनापत्र में वर्णित तथ्यों के आधार पर आरोपियों के विरुद्ध अभियोग पंजीकृत कर निम्नानुसार विवेचना सुनिश्चित की जाए।

यह आदेश कारोबारी समुदाय के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि यह कथित फर्जी वसुली और डिजिटल माध्यम से उत्पीड़न के मामलों में न्यायालय की सक्रियता को दर्शाता है। अदालत के इस निर्देश के बाद संबंधित पक्षों में हलचल है और अब पूरे प्रकरण की सच्चाई पुलिस विवेचना के बाद स्पष्ट होगी।

## अत्यन्त सहज, सरल व धार्मिक प्रवृत्ति के थे स्व. राम प्रकाश त्रिवेदी: महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. अवशेषानन्द महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृंदावन। चैतन्य विहार फेस-2 स्थित मुरली निकुंज आश्रम में श्री मुरली निकुंज निष्काम सेवा संस्थान के द्वारा एक शोक सभा आयोजित की गई जिसमें मुरली निकुंज आश्रम के संस्थापक आचार्य राजेन्द्र महाराज के बड़े भ्राता स्व. राम प्रकाश त्रिवेदी के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। साथ ही मौन धारण किया गया।

गौता आश्रम के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. अवशेषानन्द महाराज ने कहा कि स्व. राम प्रकाश त्रिवेदी अत्यन्त सहज, सरल व धार्मिक प्रवृत्ति के थे। श्रीधाम वृंदावन के प्रति उनकी श्रद्धा अपार थी।

मथुरा-वृंदावन नगर निगम के उपसभापति मुकेश सारस्वत ने कहा कि स्व. राम प्रकाश त्रिवेदी बहुत ही उदार व सेवावादी थे। वे समय-समय पर जरूरतमंदों की यथा संभव मदद किया करते थे।

प्रख्यात साहित्यकार रघूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि स्व. राम प्रकाश



त्रिवेदी के दुनिया से चले जाने से मुरली निकुंज निष्काम सेवा संस्थान की जो अपूर्वनीय क्षति हुई है, उसकी भरपाई कर पाना असंभव है। हम ठाकुर श्रीबांके बिहारी महाराज के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि वो उन्हें अपने निज धाम में निवास दे। साथ ही उनकी परिवार को इस वज्र दुख को सहने की शक्ति प्रदान करें।

इस अवसर पर विश्वविख्यात

भागवताचार्य डॉ. अशोक शास्त्री, आचार्य भगवद् त्रिवेदी, आचार्य रवींद्र शास्त्री, पण्डित सुधीर शुक्ला, आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, प्रमुख समाजसेवी प्रदीप बनर्जी, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा आदि ने भी स्व. राम प्रकाश त्रिवेदी को अपनी भावांजलि अर्पित की। संचालन भागवताचार्य आचार्य सुरेशचंद्र शास्त्री ने किया। आचार्य राजेन्द्र महाराज ने सभी का आभार व्यक्त किया।

अब उत्तर प्रदेश केवल विकास की बात नहीं करता, बल्कि विकास को धरतल पर उतारकर देश की अग्रणी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में दृढ़ता से आगे बढ़ रहा है।

उत्तर प्रदेश, संजय सिंह। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए प्रस्तुत अब तक के सबसे बड़े बजट को वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने विकास, विश्वास और आत्मनिर्भरता की दिशा में ऐतिहासिक कदम बताया है। उन्होंने इसे जनकल्याणकारी, विकासोन्मुखी और सर्वस्पर्शी बजट करार देते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं वित्त मंत्री सुरेश खन्ना को बधाई दी।

वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाराज जी के नेतृत्व में प्रस्तुत यह बजट प्रदेश को निवेश और रोजगार का हब बनाने की दिशा में निर्णायक साबित होगा। यह बजट किसानों, युवाओं, महिलाओं, उद्यमियों तथा आम नागरिकों को सर्वांगीण और विविधता से सशक्त करेगा। उन्होंने कहा कि यह केवल आंकड़ों का दर्शावट नहीं, बल्कि एक ट्रिपलियन डॉलर अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ते उत्तर प्रदेश की ठोस

कार्ययोजना है। सर्वांगीण विकास को स्पष्ट झलक वरिष्ठ समाजसेवी ने कहा कि बजट में जनभावनाओं और विकास का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। सड़क, एक्सप्रेसवे, शहरी विकास, औद्योगिक निवेश और बुनियादी ढांचे के विकास को नई गति देने के साथ-साथ रोजगार सृजन को प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की प्राथमिकता स्पष्ट है - जनकल्याण, आर्थिक मजबूती और अवसरों का विस्तार।

उन्होंने विशेष रूप से युवाओं को प्रदेश की सबसे बड़ी ताकत बताते हुए कहा कि सरकार ने औद्योगिक विकास, स्टार्टअप, एम्प्लोयमेंट और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देने से किसानों की दिया है कि उत्तर प्रदेश का भविष्य रोजगार और उद्यमिता पर आधारित होगा। 'टेक युवा, समर्थ युवा' के संकल्प के साथ मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान हेतु 1,000 करोड़ रुपये की व्यवस्था युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

### शिक्षा और मेधावी छात्रों पर विशेष फोकस

बजट में शिक्षा क्षेत्र को लगभग 12.4 प्रतिशत आवंटन दिया जाना सरकार की प्राथमिकताओं को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि

शिक्षा में निवेश ही भविष्य की गुणवत्ता और कौशल विकास का आधार है। मेधावी छात्रों को स्कूटी प्रदान करने के लिए 400 करोड़ रुपये का प्रावधान छात्रों के आत्मविश्वास और सशक्तिकरण को नई दिशा देगा। इससे प्रदेश की बेटियों में उत्साह का माहौल है।

### किसान और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती

श्री खान ने कहा कि कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए किए गए प्रावधान सरकार की उस सोच को दर्शाते हैं जिसमें किसान को आर्थिक विकास का केंद्र माना गया है। गन्ना मूल्य वृद्धि, सिंचाई परियोजनाओं का विस्तार, एग्री एक्सपोर्ट, फूड प्रोसेसिंग और कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने से किसानों की आय में वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि यह बजट किसान हितैषी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने वाला है।

### महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुरक्षा

महिलाओं की सुरक्षा, स्वावलंबन और सामाजिक सुरक्षा के लिए किए गए प्रावधानों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि महिला एवं बाल कल्याण योजनाओं को मजबूती देने के लिए मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना हेतु 252 करोड़ रुपये तथा मुख्यमंत्री बाल आश्रय योजना

# मोबाइल, नशा और तनाव – बचपन पर तीन वार “हमारे बच्चे खतरे में हैं – जिम्मेदार कौन?”



डॉ. विजय गर्ग

आज का बचपन तीन अदृश्य वार झेल रहा है—मोबाइल की लत, नशा का बढ़ता प्रचलन और तनाव का असामयिक बोझ। कभी जो बचपन खिलौनों, खेल के मैदानों और खुली हंसी में बीतता था, वह आज स्क्रीन की रोशनी, सोशल मीडिया की प्रतिस्पर्धा और अपेक्षाओं के दबाव में सिमटता जा रहा है। प्रश्न यह है कि यदि हमारे बच्चे खतरे में हैं तो इसके लिए जिम्मेदार कौन है?

घंटों तक गेम खेलना, सोशल मीडिया पर तुलना करना, देर रात तक स्क्रीन देखना—ये सब बच्चों की नींद, आंखों, मानसिक स्वास्थ्य और एकाग्रता पर बुरा प्रभाव डालते हैं। वास्तविक मित्रता की जगह वर्चुअल संबंध ले लेते हैं। परिणामस्वरूप बच्चा धीरे-धीरे परिवार और समाज से कटने लगता है।

## 1. मोबाइल: सुविधा से लत तक

मोबाइल फोन आधुनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। शिक्षा, जानकारी और संचार के लिए यह उपयोगी साधन है। लेकिन जब यही साधन बच्चों के हाथों में अनियंत्रित रूप से पहुंच जाता है, तो वह मनोरंजन से अधिक लत का माध्यम बन जाता है।

घंटों तक गेम खेलना, सोशल मीडिया पर तुलना करना, देर रात तक स्क्रीन देखना—ये सब बच्चों की नींद, आंखों, मानसिक स्वास्थ्य और एकाग्रता पर बुरा प्रभाव डालते हैं। वास्तविक मित्रता की जगह वर्चुअल संबंध ले लेते हैं। परिणामस्वरूप बच्चा धीरे-धीरे परिवार और समाज से कटने लगता है।

## 2. नशा: जिज्ञासा से विनाश तक

किशोरावस्था जिज्ञासा और प्रयोग का समय होती है। यदि इस समय सही मार्गदर्शन न मिले तो बच्चे तंबाकू, शराब या अन्य नशे की ओर आकर्षित हो सकते हैं। कई बार यह शुरूआत 'सिर्फ एक बार' से होती है, जो आगे चलकर आदत बन जाती है।

नशा न केवल शरीर को कमजोर करता है, बल्कि आत्मविश्वास, चरित्र



और भविष्य को भी प्रभावित करता है। यह परिवारों को तोड़ देता है और समाज को खोखला करता है।

## 3. तनाव: बचपन से पहले ही बोझ

आज के बच्चे पढ़ाई, प्रतियोगिता और अपेक्षाओं के दबाव में जी रहे हैं। अंक और रैंक उनकी पहचान बन गए हैं। माता-पिता और समाज की ऊँची उम्मीदें कई बार बच्चों पर असहनीय दबाव डाल देती हैं।

तनाव के कारण बच्चों में चिड़चिड़ापन, अवसाद, आत्मविश्वास की कमी और कभी-कभी आत्मघाती विचार तक पनप सकते हैं। बचपन, जो सहजता और आनंद का समय होना चाहिए, चिंता और भय का कारण बन रहा है।

## जिम्मेदार कौन?

1. परिवार: बच्चों को मोबाइल देकर चुप कराना आसान समाधान है, लेकिन इसके दूरगामी दुष्परिणाम हैं। यदि माता-पिता स्वयं स्क्रीन में डूबे रहें, तो बच्चे भी वही सीखेंगे। संवाद की कमी और समय का अभाव बच्चों को गलत

दिशाओं में ले जा सकता है।

2. समाज और मित्रमंडली: साथियों का प्रभाव अत्यंत शक्तिशाली होता है। यदि परिवेश स्वस्थ नहीं है, तो बच्चा जल्दी प्रभावित हो सकता है।

3. शिक्षा प्रणाली: केवल अंकों पर आधारित शिक्षा बच्चों में प्रतिस्पर्धा तो बढ़ाती है, पर जीवन कौशल, नैतिकता और मानसिक संतुलन की शिक्षा पीछे छूट जाती है।

4. तकनीकी और मनोरंजन उद्योग: ऐप्स और गेम्स इस तरह डिजाइन किए जाते हैं कि उपयोगकर्ता अधिक से अधिक समय स्क्रीन पर बिताए। बच्चों की संवेदनशीलता को ध्यान में रखकर पर्याप्त नियंत्रण की आवश्यकता है।

समाधान की दिशा हमें डिजिटल अनुशासन तय किया जाए—स्क्रीन टाइम सीमित हो। बच्चों के साथ खुला संवाद और गुणवत्तापूर्ण समय बिताना जाए। खेल, संगीत, पुस्तकें और

रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए।

स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा और परामर्श की व्यवस्था हो। नशे के विरुद्ध जागरूकता और सख्त सामाजिक संदेश दिए जाएं।

नियंत्रण बचपन राष्ट्र की नींव है। यदि यह नींव ही कमजोर हो जाए तो भविष्य भी डगमगा जाएगा। मोबाइल, नशा और तनाव—ये तीनों मिलकर बच्चों के मन और मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाल रहे हैं।

जिम्मेदार केवल कोई एक नहीं—परिवार, समाज, शिक्षा व्यवस्था और हम सभी हैं। यदि हम समय रहते सचेत हो जाएं, तो बचपन को फिर से मुस्कुराने का अवसर मिल सकता है।

बच्चों को केवल संसाधन नहीं, समय, संस्कार और संवेदना दीजिए—तभी उनका भविष्य सुरक्षित रहेगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

# कोचिंग संस्कृति और बच्चों की मौतें: सफलता के नाम पर असफल समाज

- डॉ० प्रियंका सौरभ

कोचिंग में एक और छात्रा की आत्महत्या—यह कोई साधारण खबर नहीं है और न ही किसी एक परिवार की निजी त्रासदी भर। यह उस शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक मानसिकता और तथाकथित 'सफलता मॉडल' पर गहरा प्रश्नचिह्न है, जिसे हमने पिछले दो दशकों में बिना सवाल किए स्वीकार कर लिया है। आत्महत्या करने वाली छात्रा कृति का सुसाइड नोट केवल व्यक्तिगत पीड़ा का दस्तावेज नहीं है, बल्कि वह एक आरोपपत्र की तरह हमारे पूरे समाज के सामने खड़ा होता है—माता-पिता, कोचिंग संस्थान, स्कूल और नीति-निर्माता सभी इसके दायरे में आते हैं।

कृति ने अपने सुसाइड नोट में भारत सरकार और मानव संसाधन मंत्रालय से अपील की थी कि अगर वे सच में चाहते हैं कि कोई बच्चा न मरे, तो कोचिंग संस्थानों को जल्द से जल्द बंद कर देना चाहिए, क्योंकि ये संस्थान छात्रों को भीतर से खोखला कर देते हैं। यह कथन किसी क्षणिक आवेग का परिणाम नहीं था, बल्कि उस लंबे मानसिक उतपीड़न की अभिव्यक्ति थी, जिसे आज लाखों छात्र रोज झेल रहे हैं। असली सवाल यह नहीं है कि कृति ने ऐसा क्यों लिखा, बल्कि यह है कि क्या वह गलत थी।

आज भारत में कोचिंग शिक्षा का सहायक माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि एक विशाल और मुनाफ़े पर आधारित उद्योग बन चुकी है। कोटा, सीकर, हैदराबाद, दिल्ली और पटना जैसे शहर 'एजुकेशन हब' कहलाते हैं, जहाँ हर साल लाखों किशोर अपने माता-पिता के सपनों का बोझ उठाए पहुँचते हैं। इन सपनों के केंद्र में कुछ सीमित शब्द होते हैं—आईआईटी, एम्स, नीट, रैंक और सेलेक्शन। कोचिंग संस्थान बच्चों को यह यकीन दिलाते हैं कि यदि वे चयनित नहीं हुए, तो वे असफल हैं। सफलता की यह परिभाषा इतनी संकीर्ण है कि उसमें औसत छात्र के लिए कोई जगह नहीं बचती, और असफलता से उबरने की कोई मानवीय प्रक्रिया भी नहीं होती।

कृति का यह कथन कि "90+ अंक लाने वाली लड़की भी आत्महत्या कर सकती है" हमारे उस भ्रम को तोड़ता है, जिसमें हम यह मान लेते हैं कि मानसिक संकट केवल कमजोर या असफल छात्रों तक सीमित है। यह सोच न सिर्फ गलत है, बल्कि खतरनाक भी है। आज का दबाव केवल परीक्षा पास करने या अच्छे अंक लाने का नहीं रह गया है, बल्कि माता-पिता, शिक्षकों और समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का बन गया है। हर बच्चा अपने भीतर एक काल्पनिक 'परफेक्ट स्टूडेंट' की छवि ढो रहा है, जिसे वह लगातार हारता चला जाता है। ऊँचे अंक और बेहतर प्रदर्शन भी अब मानसिक शांति की गारंटी नहीं रहे, क्योंकि समस्या पढ़ाई नहीं है, बल्कि उस माहौल की है जिसमें पढ़ाई कराई जा रही है।

कृति द्वारा अपनी माँ के लिए लिखी गई पंक्ति 'इस पूरे संकट की जड़ को उजागर करती है। वह बताती है कि उसे विज्ञान पसंद



कृति ने अपने सुसाइड नोट में भारत सरकार और मानव संसाधन मंत्रालय से अपील की थी कि अगर वे सच में चाहते हैं कि कोई बच्चा न मरे, तो कोचिंग संस्थानों को जल्द से जल्द बंद कर देना चाहिए, क्योंकि ये संस्थान छात्रों को भीतर से खोखला कर देते हैं। यह कथन किसी क्षणिक आवेग का परिणाम नहीं था, बल्कि उस लंबे मानसिक उतपीड़न की अभिव्यक्ति थी, जिसे आज लाखों छात्र रोज झेल रहे हैं। असली सवाल यह नहीं है कि कृति ने ऐसा क्यों लिखा, बल्कि यह है कि क्या वह गलत थी।

करने के लिए मजबूर किया गया, जबकि

उसकी वास्तविक रुचि अंग्रेजी साहित्य और इतिहास में थी। यह कहानी किसी एक घर तक सीमित नहीं है। यह देश के हज़ारों, बल्कि लाखों घरों की सच्चाई है, जहाँ बच्चे की रुचि से ज्यादा समाज की अपेक्षा मायने रखती है। माता-पिता अक्सर यह भूल जाते हैं कि बच्चा उनकी अधूरी महत्वाकांक्षाओं का विस्तार नहीं है, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है। सामाजिक तुलना—कि फलों का बेटा डॉक्टर बन गया या फलों की बेटी आईआईटी में पहुँच गई—हमें इतना अंधा कर देती है कि हम बच्चों की इच्छाओं, क्षमताओं और सीमाओं को अनदेखा कर देते हैं।

कृति ने अपनी छोटी बहन को लेकर जो चेतना दी, वह इस सुसाइड नोट को और भी छवि ढो रहा है, जिसे वह लगातार हारता चला जाता है। ऊँचे अंक और बेहतर प्रदर्शन भी अब मानसिक शांति की गारंटी नहीं रहे, क्योंकि समस्या पढ़ाई नहीं है, बल्कि उस माहौल की है जिसमें पढ़ाई कराई जा रही है। कृति द्वारा अपनी माँ के लिए लिखी गई पंक्ति 'इस पूरे संकट की जड़ को उजागर करती है। वह बताती है कि उसे विज्ञान पसंद

सपने थोपता है।

आज के स्कूल और कोचिंग संस्थान बच्चों को गणित के सूत्र, रसायन के समीकरण और प्रतियोगी परीक्षाओं की रणनीतियों को सिखा रहे हैं, लेकिन जीवन के सबसे जरूरी पाठ सिखाने में पूरी तरह असफल हो रहे हैं। वे बच्चों को यह नहीं सिखा पा रहे कि असफलता से कैसे निपटना है, मानसिक तनाव को कैसे समझना है और मदद माँगना कमजोरी नहीं है। प्रतिस्पर्धा को प्रेरणा के बजाय भय का औज़ार बना दिया गया है। रैंक लिस्ट, मार्क टेस्ट और लगातार तुलना बच्चों के मन में स्थायी हीनभावना भर देती है, जिससे वे खुद को केवल अंकों और चयन के चश्मे से देखने लगते हैं।

हर ऐसी मौत के बाद सरकार की ओर से औपचारिक बयान आते हैं, जॉच के आदेश दिए जाते हैं और कुछ दिनों तक बहस चलती है। इसके बाद सब कुछ फिर सामान्य हो जाता है। न कोचिंग संस्थानों के कामकाज पर सख्त नियंत्रण नहीं होता है, न उनके कटे सीमित जाते हैं, न मानसिक स्वास्थ्य को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाता है। यदि सरकार सच में गंभीर है, तो कोचिंग उद्योग के लिए

सख्त नियमन, छात्रों के लिए सुलभ मानसिक स्वास्थ्य सहायता और स्कूल स्तर पर करियर की विविध संभावनाओं को स्वीकार करने की ठोस नीति बनानी होगी।

सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि हम सफलता को किस रूप में परिभाषित करते हैं। क्या एक अच्छा इंसान बनना, मानसिक रूप से स्वस्थ रहना और अपनी रुचि के क्षेत्र में संतुष्ट जीवन जीना सफलता नहीं है? यदि नहीं, तो हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर रहे हैं जो चयनित तो होगी, लेकिन भीतर से टूटी हुई और असंतुष्ट होगी। कृति की मौत हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि कहीं हम अपने बच्चों को जिंदा रहते हुए ही तो नहीं मार रहे—उनकी इच्छाओं को, उनके सपनों को और उनकी स्वतंत्रता को।

कृति का सुसाइड नोट केवल एक छात्रा की अंतिम अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि एक सामाजिक चेतना है। अगर अब भी हमने नहीं सुना, नहीं समझा और नहीं बदले, तो ऐसी घटनाएँ रुकने वाली नहीं हैं। सवाल यह नहीं है कि अगला बच्चा कौन होगा। असली सवाल यह है कि क्या हम अगले बच्चे को बचा पाएँगे।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं



## संपादकीय

चिंतन-मगन

# दाढ़ी पर नहीं, सोच पर बहस जरूरी

(फैशन, पहचान और भ्रम: आज के युवाओं के सामने असली चुनौती)

— डॉ. सत्यवान सौरभ

हर दौर की अपनी पहचान होती है। यह पहचान केवल कपड़ों, हेयर-स्टाइल या चेहरे पर उगे बालों से नहीं बनती, बल्कि उस सोच से बनती है जो व्यक्ति और समाज—दोनों को दिशा देती है। आज के समय में युवाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वे कैसे दिखते हैं यह कम, और क्या सोचते हैं तथा किसका अनुकरण करते हैं—यह अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। बाहरी आकर्षण, सोशल मीडिया की चमक और तात्कालिक लोकप्रियता ने पहचान की परिभाषा को सही बना दिया है।

बोते कुछ वर्षों में दाढ़ी को लेकर एक तीखी बहस उभरी है। कुछ लोग इसे आधुनिक फैशन का प्रतीक मानते हैं, तो कुछ इसे सांस्कृतिक भ्रम और अंधानुकरण का उदाहरण। यह बहस तब और जटिल हो जाती है जब इसे धर्म, राजनीति या साहित्य से जोड़ दिया जाता है। ऐसे में जरूरी है कि हम भावनाओं से ऊपर उठकर, शोर से दूर रहकर, विवेकपूर्ण और तथ्यपरक दृष्टि से इस विषय को देखें। क्योंकि जब मुझे विचार के बजाय पहचान की लड़ाई बन जाते हैं, तब समाधान नहीं, विभाजन पैदा होता है।

इतिहास गवाह है कि दाढ़ी और क्लीन शेव—दोनों ही भारतीय समाज का हिस्सा रहे हैं। वैदिक काल के ऋषि-मुनि जटाधारी थे, तो राजदरबारों में सुसज्जित, साफ-सुथरे व्यक्ति भी दिखाई देते थे। मध्यकाल हो या आधुनिक काल—हर युग में दोनों प्रकार के रूप साथ-साथ मौजूद रहे। स्वतंत्रता संग्राम के समय महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह, पंडित नेहरू—सभी का रूप अलग था, पर उद्देश्य एक। स्पष्ट है कि दाढ़ी कोई नई या बाहरी चीज नहीं है, और न ही क्लीन शेव कोई विदेशी अवधारणा। दोनों ही समय, परिस्थिति और व्यक्तिगत पसंद के अनुसार बदलते रहे हैं।

आज दाढ़ी का चलन केवल भारत तक सीमित नहीं है। यह एक वैश्विक फैशन का हिस्सा बन चुका है। हॉलीवुड, यूरोपीय फैशन, खेल जगत, संगीत उद्योग और डिजिटल इन्फ्लुएंसर्स—हर जगह दाढ़ी अलग-अलग शैलियों में दिखाई देती है। सोशल मीडिया ने इन रुझानों को और तेज कर दिया है। एक तस्वीर, एक वीडियो या एक रील के जरिये ट्रेंड पल भर में दुनिया भर में फैल जाते हैं। ऐसे में यह मान लेना कि कोई एक उद्योग, समूह या विचारधारा ही किसी फैशन को 'फैला' रही है, वास्तविकता का सरलीकरण होगा। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि अंधानुकरण एक गंभीर समस्या बन चुका है। जब युवा किसी भी ट्रेंड को बिना सोचे-समझे केवल इसलिए अपनाते हैं क्योंकि वह लोकप्रिय है या 'कूल' माना जा रहा है, तब उनका व्यक्तित्व उधार का हो जाता है। पहचान तब समस्या बनती है जब वह सोच पर हावी हो जाए और पहचान को केवल बाहरी प्रतीकों तक सीमित कर दे। सवाल दाढ़ी रखने या न रखने का नहीं है; सवाल यह है कि क्या हम अपने चुनाव के कारण जानते हैं, या सिर्फ भीड़ के साथ चल रहे हैं?

इस संदर्भ में सिनेमा और डिजिटल मीडिया की भूमिका पर चर्चा जरूरी है। मनोरंजन उद्योग न केवल कहानियाँ

सुनाता है, बल्कि जीवन-शैली के मानक भी गढ़ता है। बार-बार एक ही तरह के "लुक", "स्टाइल" और "हीरोइज्म" को आदर्श बनाकर प्रस्तुत करने से युवाओं के सामने विकल्प सीमित हो जाते हैं। इससे विविधता कम होती है और एकरूपता बढ़ती है। जिम्मेदार मीडिया वही है जो समाज की बहुलता को दिखाए—जहाँ सादगी भी आकर्षक हो, और अलग-अलग व्यक्तित्व भी स्वीकार्य हों। लेकिन दर्शक के रूप में हमारी भी जिम्मेदारी है कि हम दिखावे और मूल्य में अंतर करना सीखें।

ईश्वर, संस्कृति और सौंदर्य की चर्चा में भी संतुलन आवश्यक है। हमारी परंपराएँ अत्यंत विविध रही हैं। कहीं जटाधारी तपस्वी हैं, तो कहीं सुसज्जित देव-प्रतिमाएँ, कहीं वैराग्य है, तो कहीं श्रृंगार। सौंदर्य का अर्थ केवल बाहरी रूप नहीं, बल्कि आचरण, करुणा, संयम और विवेक है। यदि हम सौंदर्य को केवल चेहरे, दाढ़ी या फैशन तक सीमित कर दें, तो हम अपनी ही सांस्कृतिक गहराई को कम कर देते हैं। आज के युवाओं के सामने असली चुनौती किसी एक फैशन से नहीं, बल्कि आत्मबोध की कमी से है। जब युवा अपने इतिहास, मूल्यों और सांस्कृतिक बहुलता को समझते हैं, तब वे किसी भी ट्रेंड को अपनाएँ—या न अपनाएँ—वह उनका सजोर और स्वतंत्र निर्णय होता है। लेकिन जब पहचान केवल बाहरी प्रतीकों पर टिक जाती है, तब भ्रम पैदा होता है और व्यक्ति आसानी से प्रभावित हो जाता है।

समाधान डर, आरोप या साक्षिण की भाषा में नहीं है। समाधान शिक्षा, संवाद और आत्मविश्वास में है। युवाओं को यह समझाना जरूरी है कि फैशन क्षणिक होता है, लेकिन चरित्र स्थायी। आज जो ट्रेंड है, कल बदल जाएगा; पर जो मूल्य आप अपनाते हैं, वही जीवन भर साथ रहते हैं। इसलिए चयन सोच-समझकर होना चाहिए—न दबाव में, न डर में, और न ही अंधानुकरण में।

समाज को विभाजन की भाषा से भी सावधान रहना चाहिए। जब हम किसी चलन को डर या साक्षिण के चश्मे से देखते हैं, तो संवाद बंद हो जाता है और ध्रुवीकरण बढ़ता है। इसके विपरीत, जब हम प्रश्न पूछते हैं—"क्यों?", "कैसे?" और "किस हद तक?"—तब समझ विकसित होती है। स्वस्थ समाज वही है जो अहमर्तु को जगह देता है, लेकिन सम्मान और तथ्य के साथ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम युवाओं को आलोचनात्मक सोच सिखाएँ—ताकि वे हर ट्रेंड को आँख बंद करके न अपनाएँ। उन्हें अपने शरीर, समय और पहचान पर अधिकार का बोध हो। पहचान अपनाना गलत नहीं, गलत है पहचान के पीछे खूद को खो देना। व्यक्तित्व की असली सुंदरता बाहरी सजावट में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और विवेक में होती है।

अंततः, यह बहस दाढ़ी की नहीं, दिशा की है। हम अपनी पहचान किस पर बना रहे हैं—दिखावे पर या विचार पर? यदि हम युवाओं को शिक्षा, अवसर और आत्मसम्मान देगे, तो वे किसी भी फैशन में सुरक्षित रहेंगे—क्योंकि उनकी जड़ें मजबूत होंगी। समाज का भविष्य बाहरी रूपों से नहीं, सोच की मजबूती से तय होता है। और वही सोच हमें यह सिखाती है कि ट्रेंड आते-जाते रहते हैं, लेकिन मूल्य वही होते हैं जो समय की कसौटी पर टिकते हैं।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक है।)

# एक्सपायरी डेट का काला खेल:- उपभोक्ता स्वास्थ्य, कानून और प्रशासनिक जवाबदेही पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य में एक समग्र विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी  
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक बाजार व्यवस्था में उपभोक्ता विश्वास सबसे बड़ा पूंजीगत आधार माना जाता है। यदि ग्राहक को यह भरोसा न रहे कि जो उत्पाद वह खरीद रहा है वह सुरक्षित, प्रमाणित और नियामक द्वारा संचालित है, तो पूर्ण बाजार संरचना डगमगा सकती है। भारत जैसे विशाल और विविधता पूर्ण देश में, जहाँ रोजाना करोड़ों लोग पैकेज्ड खाद्य, पेय पदार्थ और दवाइयों खरीदते हैं, वहाँ एक्सपायरी डेट के साथ छेड़छाड़ का बढ़ता गोरखधंधा न केवल आर्थिक अपराध है बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा भी है। हाल के समय में सामने आए मामलों में एक्सपायर्ड माल पर थिनर, एसोटीजे जैसे सामानों से तात्ख मिटाकर नई तारीख छापने की घटनाएँ शामिल हैं। न यह स्पष्ट कर दिया है कि कुछ असामाजिक तत्व लाभ के लालच में नागरिकों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने से भी पीछे नहीं हट रहे हैं। एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह बताना चाहता हूँ कि खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में भारत ने सुदृढ़ कानूनी ढाँचा बनाया है। खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 देश में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता, पैकेजिंग, लेबलिंग और लाइसेंसिंग को नियंत्रित करता है। इसी के अंतर्गत भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण की स्थापना की गई, जिसका दायित्व खाद्य मानकों का निर्धारण, निरीक्षण और प्रवर्तन सुनिश्चित करना है। इस अधिनियम के अनुसार किसी भी खाद्य व्यवसाय संचालक को एक्सपायरी डेट को सही ढंग से अंकित करना है और फिफ्टी फिफ्टी पर्यंत जारी है, तो यह स्पष्ट आयातिका उल्लंघन है। एक्सपायर्ड उत्पाद बेचना या उसकी तारीख बदलना न केवल लाइसेंस शर्तों का उल्लंघन है, बल्कि यह धोखाधड़ी और स्वास्थ्य संकट का सीधा परिणाम है। उपभोक्ता संरक्षण के संदर्भ में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस कानून के तहत भ्रामक व्यापारिक प्रथाएँ, गलत विज्ञापन, गुणवत्ता में कमी या सुरक्षा से समझौता करने पर कठोर दंड का प्रावधान है। यदि कोई विक्रेता जानबूझकर एक्सपायर्ड माल बेचना है या एक्सपायरी डेट बदलकर उपभोक्ता को भ्रमित करता है, तो उपभोक्ता इस अधिनियम के तहत जिला, राज्य या राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग में शिकायत दर्ज कर सकता है। साथ ही, केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण को भी भ्रामक और असुरक्षित व्यापारिक प्रथाओं पर कार्रवाई का अधिकार प्राप्त है।

साथियों बात अगर हम एक्सपायरी डेट, बेस्ट बिफोर और यूज बाय के तीन शब्दों का अंतर को समझने की करें तो, प्रत्येक ग्राहक के लिए वैध और आवश्यक है। एक्सपायरी डेट या यूज बाय वह अंतिम तिथि है जिसके बाद उत्पाद का सेवन स्वास्थ्य के लिए असुरक्षित हो सकता है। विशेषकर डेयरी उत्पाद, मांस, रेडी-टू-ईट फूड और सवाइयर्स इस श्रेणी में आती हैं। बिस्ट बिफोर का अर्थ है कि उस तिथि तक उत्पाद की गुणवत्ता सर्वोत्तम रहेगी; उसके बाद गुणवत्ता में गिरावट संभव है, किंतु हर स्थिति में वह सुरक्षित रहने के लिए आवश्यक नहीं। दवाइयों के संदर्भ में स्थिति और भी गंभीर है; उनकी एक्सपायरी के बाद प्रभावशीलता घट सकती है या रासायनिक बनावट बदल सकती है, जिससे दुष्प्रभाव हो सकते हैं। इसलिए दवा खरीदते समय एक्सपायरी डेट देखा जाना अनिवार्य साधन है। साथियों बात अगर हम हाल ही में 2 दिन पूर्व घटित हुए एक चर्चित प्रकरण को समझने की करें, तो अमूल ब्रांड के लगभग 30 हजार किलो एक्सपायर्ड नॉन-डेयरी उत्पाद, जैसे नूडल्स, केचअप, मंगोनीज और एनर्जी ड्रिंक, एक फर्म से जब्त किए गए। रिपोर्टों के अनुसार लगभग 6 करोड़ रुपये मूल्य के इस माल में से हजारों कार्टन में निर्माण और एक्सपायरी तिथि मिटाकर पुनः बाजार में उतारने की तैयारी थी, और संबंधित फर्म का फूड लाइसेंस भी एक्सपायरी था। यदि फूड संपत्ति टीम समय पर कार्रवाई न करती, तो यह माल लाखों उपभोक्ताओं तक पहुँच सकता था। यह घटना बताती है कि संगठित स्तर पर भी तारीख बदलने की तकनीकें अत्यंत आसानी से काम कर रही हैं। केमिकल से प्रिंट हटाकर नई तारीख छापना शामिल है। यह न केवल कानूनन अपराध है, बल्कि यह उपभोक्ता के जीवन के साथ गंभीर खिलवाड़ है। ऐसी घटनाएँ यह प्रश्न उठाती हैं कि क्या हम अनजाने में एक्सपायर्ड माल का सेवन कर रहे हैं? किराना दुकानों सुपरमार्केट, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और यहाँ तक कि सरकारी उचित मूल्य की दुकानों में भी यदि निगरानी डीली हो, तो जोखिम बढ़ जाता है। विशेष चिंता तब और गहरी हो जाती है जब सार्वजनिक वित्तन प्रणाली या स्कूल मिड-डे मील जैसे योजनाओं में गुणवत्ता से समझौता हो। गरीब और मध्यम वर्गीय परिवार अक्सर सस्ती वस्तुओं की ओर आकर्षित होते हैं; यदि वह वस्तुएँ एक्सपायर्ड या छेड़छाड़ की हुई हों, तो स्वास्थ्य संकट कई गुना बढ़ जाता है।

साथियों बात अगर हम स्वास्थ्य विशेषज्ञों की एडवाइस को समझने की करें तो उनके अनुसार एक्सपायर्ड खाद्य पदार्थों के सेवन से फूड पॉइजनिंग, उल्टी-दस्त, पेट दर्द, बैक्टीरियल संक्रमण, यहाँ तक कि गंभीर मामलों में अस्पताल में भर्ती होने की नीबत आ सकती है। दूषित या एक्सपायर्ड पेय पदार्थों से फंगल ग्रोथ, टॉक्सिन और रासायनिक बदलाव की संभावना रहती है। बच्चों, बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं के लिए जोखिम अधिक होता है। दवाइयों के मामले में एक्सपायरी के बाद दवा की प्रभावशीलता कम हो सकती है, जिससे उपचार फिलहाल सफल नहीं होता है और रोग जटिल हो सकता है। ऐसी स्थिति में नागरिकों को भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी प्रशासन की। हर प्रासबाविक अक्षरों में अंतर्निहित अनुरोधों को ध्यान में रखना है। यदि तारीख धुंधली हो, दोबारा छपी हुई लगे या पैकेजिंग संदिग्ध प्रतीत हो, तो उत्पाद न खरीदें। बिल अवश्य ले ताकि शिकायत की स्थिति में प्रमाण उपलब्ध रहे।

## धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण त्यौहार है महाशिवरात्रि

रमेश सराफ धर्मो



दिन प्रकृति इंसाज को अपने आध्यात्मिक चरम पर पहुंचने के लिए प्रेरित करती है। गृहस्थ जीवन में रहने वाले लोग महाशिवरात्रि को शिव की विवाह वर्षगांठ के रूप में मनाते हैं। सांसारिक महत्वाकांक्षाएं रखने वाले लोग इस दिन को शिव की दुश्मनों पर विजय के रूप में देखते हैं।

माना जाता है की इस दिन भगवान शंकर और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इस दिन लोग व्रत रखते हैं और भगवान शिव की पूजा करते हैं। महाशिवरात्रि का व्रत रखना सबसे आसान माना जाता है। इसलिये बच्चों से लेकर बूढ़े तक सभी इस दिन व्रत रखते हैं। महाशिवरात्रि के व्रत रखने वालों के लिये अन्न खाना मना होता है। इसलिये उस दिन फलाहार किया जाता है। राजस्थान में व्रत के समय गाजर, बेर का सीजन होने से गांवों में लोगों द्वारा गाजर, बेर का फलाहार किया जाता है। लोग मन्दिरों में भगवान शिव की पूजा करते हैं व उन्हें आक, धनुष चढ़ाते हैं। भगवान शिव को विशेष रूप से भांग का प्रसाद लगाता है। इस कारण इस दिन काफी जगह शिवधक्त भांग घोट कर पीते हैं।

पुराणों में कहा जाता है कि एक समय शिव पार्वती को कैलाश पर्वत पर बैठे थी। उसी समय पार्वती ने प्रश्न किया कि इस तरह का कोई व्रत है जिसके करने से मनुष्य आपके धाम

को प्राप्त कर सके ? तब उन्होंने यह कथा सुनाई थी कि प्रत्येक नामक देश में एक व्यक्ति रहता था, जो जीवों को बेचकर अपना भरण पोषण करता था। उसने सेठ से धन उधार ले रखा था। समय पर कर्ज न चुकाने के कारण सेठ ने उसको शिवमठ में बन्द कर दिया।

संयोग से उस दिन फाल्गुन बदी चतुर्दशी थी। वहां रातभर कथा, पूजा होती रही जिसे उसने भी सुना। अगले दिन शिग्रज कर्ज चुकाने की शर्त पर उसे छोड़ा गया। उसने सोचा रात को नदी के किनारे बैठना चाहिये। वहां जरूर कोई न कोई जानवर भी पीने आयेगा। अतः उसने पास के बील वृक्ष पर बैठने का स्थान बना लिया। उस बील के नीचे एक शिवलिंग था। जब वह पेड़ पर अपने छिपने का स्थान बना रहा था उस समय बील के पत्तों को तोड़कर फेंकता जाता था जो शिवलिंग पर ही गिरते थे। वह दो दिन का भूखा था। इस तरह से वह अनजाने में ही शिवरात्रि का व्रत कर ही चुका था। साथ ही शिवलिंग पर बेल-पत्र भी अपने आप चढ़ते गये।

एक पहर रात्रि बीतने पर एक गर्भतीर्थी हिरणी पानी पीने आई। उस व्याध ने तीर को धनुष पर चढ़ाया किन्तु हिरणी की कातर वाणी सुनकर उसे इस शर्त पर जाने दिया कि सुबह होने पर वह स्वयं आयेगी। दूसरे पहर में दूसरी हिरणी आई। उसे भी छोड़ दिया।

तीसरे पहर की एक हिरणी आई उसे भी उसने छोड़ दिया और सभी ने यही कहा कि सुबह होने पर मैं आपके पास आऊंगी। चौथे पहर एक हिरण आया। उसने अपनी सारी कथा कह सुनाई कि वे तीनों हिरणियां मेरी स्त्री थीं। वे सभी मुझसे मिलने को छटपटा रही थीं। इस पर उसको भी छोड़ दिया तथा कुछ और भी बेल-पत्र नीचे गिराये। इससे उसका हृदय बिल्कुल पवित्र, निर्मल तथा कोमल हो गया।

प्रातः होने पर वह बेल-पत्र से नीचे उतरा। नीचे उतरने से और भी बेल पत्र शिवलिंग पर चढ़ गये। अतः शिवजी ने प्रसन्न होकर उसके हृदय को इतना कोमल बना दिया कि अपने पुराने पापों को याद करके वह पछताने लगा और जानवरों का वध करने से उसे रण्णा हो गई। सुबह वे सभी हिरणियां और हिरण आये। उनके सत्य वचन पालन करने को देखकर उसका हृदय दुग्ध सा धवल हो गया और वह फूट-फूट कर रोने लगा।

महाशिवरात्रि का पर्व हमारे जीवन में ईश्वरीय शक्ति के महत्व को दिखलाता है। हमें भगवान शिव के द्वारा मानव जाति तथा सृष्टि के कल्याण के लिए विषयपान जैसे असीम त्याग को प्रदर्शित करता है। यह दिन हमें इस बात को याद दिलाता है कि यदि हम अच्छे कर्म करेंगे और ईश्वर

के प्रति श्रद्धा रखेंगे तो ईश्वर भी हमारी रक्षा अवश्य करेंगे। लोगों का मानना है कि महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव हमारे निकट होते हैं और इस दिन पूजा अर्चना तथा रात्रि जागरण करने वालों को उनकी विशेष कृपा प्राप्त होती है। कई लोग इस दिन दान धर्म करते हैं तथा गरीबों को खाना खिलाकर भगवान शिवजी से अपनी सुखी जीवन के लिए प्रार्थना करते हैं।

शिवरात्रि के प्रसंग को हमारे वेद, पुराणों में बताया गया है कि जब समुद्र मन्थन हो रहा था उस समय समुद्र में चौदह रत्न प्राप्त हुए। उन रत्नों में हलाहल भी था। जिसकी गर्मी से सभी देव दानव त्रस्त होने लगे। तब भगवान शिव ने उसका पान किया। उन्होंने लोक कल्याण की भावना से अपने को उत्सर्ग कर दिया। इसलिए हमको महादेव कहा जाता है। जब हलाहल को उन्होंने अपने कंठ के पास रख लिया तो उसकी गर्मी से कंठ नीला हो गया। तभी से भगवान शिव को नीलकंठ भी कहते हैं। शिव का अर्थ कल्याण होता है। जब संसार में पापियों की संख्या बढ़ जाती है तो शिव उनका संहार कर लोगों की रक्षा करते हैं। इसीलिए उन्हें शिव कहा जाता है।

योगियों और संन्यासियों के लिए यह वह दिन है जब शिव कैलाश पर्वत के साथ एकाकार हो गए थे। योगिक परम्परा में शिव को ईश्वर के रूप में नहीं पूजा जाता है। बल्कि उन्हें प्रथम गुरु, आदि गुरु माना जाता है। जो योग विज्ञान के जन्मदाता थे। कई सदियों तक ध्यान करने के बाद शिव एक दिन वह पूरी तरह स्थिर हो गए। उनके भीतर की सारी हलचल रुक गई और वह पूरी तरह स्थिर हो गए। वह दिन महाशिवरात्रि था। इसलिए संन्यासी महाशिवरात्रि को स्थिरता की रात के रूप में देखते हैं।

## स्लाइट में "6जी और आगे: वायरलेस संचार का भविष्य" विषय पर सेमिनार सफलतापूर्वक समाप्त



लॉगोवाल, 13 फरवरी (जगसीर सिंह) - "6जी और आगे: वायरलेस संचार का भविष्य" विषय पर दो दिवसीय अखिल भारतीय सेमिनार सफलतापूर्वक

सम्पन्न हुआ। इस सेमिनार को इलेक्ट्रॉनिक्स एवं दूरसंचार प्रभागीय बोर्ड, इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) द्वारा प्रायोजित किया गया था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) टी. एस. कमल, पूर्व उपाध्यक्ष आई.ई. आई. रहे, जबकि अध्यक्ष ई.टी.डी.बी. ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। अपने संबोधन में प्रो. कमल ने कहा कि 6जी तकनीक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को अपने मूल में समाहित कर उद्योग जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाली है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि 6जी केवल गति और कनेक्टिविटी को ही नहीं बढ़ाएगी, बल्कि बुद्धिमान स्वचालन, गहन और अगली पीढ़ी की वायरलेस

पारिस्थितिकी तंत्र को भी संभव बनाएगी। विशिष्ट अतिथि प्रो. जगतराज सिंह ने छात्रों और शोधार्थियों के लिए उपलब्ध विभिन्न अनुसंधान निधियों और परियोजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने युवाओं को 6जी क्षेत्र में स्वदेशी विकास में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो. जे. एस. उभि, अध्यक्ष, द्वारा स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने अतिथियों और प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया तथा छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए ऐसे सेमिनारों को प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। प्रो. अजयपाल ने सेमिनार की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें तकनीकी सत्रों, मुख्य व्याख्यानों, शोध पत्र प्रस्तुतियों और विद्वानों व उद्योग विशेषज्ञों की सक्रिय भागीदारी का उल्लेख किया गया। उन्होंने बताया कि यह सेमिनार टेराहर्ट्ज संचार, एआई-सक्षम नेटवर्क, अल्ट्रा-लो लेटेंसी सिस्टम और अगली पीढ़ी की वायरलेस

संरचनाओं जैसे उभरते क्षेत्रों पर विचार-विमर्श का उत्कृष्ट मंच साबित हुआ। सेमिनार का उद्घाटन 12 फरवरी को निदेशक प्रभारी प्रो. अजात शत्रु अरोड़ा द्वारा किया गया था। निदेशक प्रो. मणि कान्त पासवान ने आयोजन टीम को बधाई दी और बताया कि ए.ए.एल.आई.ई.टी. को शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए मान्यता प्राप्त है। इसे राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा ए ग्रेड प्रदान किया गया है तथा राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क में इंजीनियरिंग कॉलेजों में 76वाँ और विश्वविद्यालयों में 85वाँ स्थान प्राप्त हुआ है। यह उपलब्धि संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता, नवाचार और तकनीकी प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस अवसर पर प्रो. अमर प्रताप सिंह, प्रो. सुरिंदर सिंह, प्रो. कमलेश प्रसाद, प्रो. वी. के. कुकरेजा, प्रो. सुरिता मैनी सहित ईसीई विभाग के संकाय सदस्य एवं कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

## नारी ही परिवार की खुशी, राष्ट्र का गौरव और सुख की धुरी है

-सुनील कुमार महला

स्त्री की गरिमा और उसका सम्मान भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा रहे हैं। हमारे यहां नारी को शक्ति, करुणा और सृजन का प्रतीक माना गया है तथा शास्त्रों में कहा गया है- 'यत्र नारी पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।' यहां पाठकों को बताता चर्च कि यह प्रसिद्ध संस्कृत वचन 'मनुस्मृति' से लिया गया है, जिसका अर्थ है कि जहां नारी का सम्मान और आदर होता है, वहां देवताओं का वास होता है। वास्तव में, यह कथन भारतीय संस्कृति में स्त्री के उच्च और पूजनीय स्थान को दर्शाता है। नारी को शक्ति, करुणा, त्याग और सृजन की प्रतीक माना गया है। सच तो यह है कि परिवार और समाज की असली आधारशिला नारी ही होती है और जिस समाज में महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा और सुरक्षा मिलती है, वह समाज और देश प्रगति और समृद्धि की ओर अग्रसर होता है। इसके विपरीत, जहां नारी का अपमान होता है, वहां अशांति और पतन का वातावरण बनता है। इसलिए नारी सम्मान केवल सामाजिक कर्तव्य नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक आवश्यकता भी है। इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू और अहिल्याबाई होल्कर जैसी महान महिलाओं ने साहस, नेतृत्व और त्याग का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। परिवार और समाज के निर्माण में स्त्री की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है; वह मां, बहन, पत्नी और बेटी के रूप में जीवन को संवेदना, संतुलन और संस्कार प्रदान करती

है। आज के आधुनिक युग में महिलाएं शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, खेल और प्रशासन सहित हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रही हैं। इसलिए आवश्यक है कि स्त्री का सम्मान केवल परंपरा या शब्दों तक सीमित न रहे, बल्कि व्यवहार, सोच और सामाजिक व्यवस्था में भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे, तभी हमारा समाज सच्चे अर्थों में उन्नत और सभ्य बन सकेगा। बहरहाल, स्त्रियों की गरिमा व सम्मान के क्रम में हाल ही में जैस्मीन सैंडलस ने दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में एक संगीत कार्यक्रम के दौरान एक बड़ा और साहसी कदम उठाया। जब कुछ लोग वहां मौजूद लड़कियाँ और महिलाओं को परेशान कर रहे थे, तो उन्होंने गाना बीच में ही कर दिया। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चर्च कि जैस्मीन सैंडलस एक प्रसिद्ध भारतीय-अमेरिकी पंजाबी गायिका और गीतकार हैं, जिन्होंने अपने अलग अंदाज और दमदार आवाज से संगीत जगत में खास पहचान बनाई है। उनका जन्म 4 सितंबर 1985 को पंजाब के जालंधर में हुआ और बाद में वह अमेरिका के कैलिफोर्निया में पली-बढ़ीं। उन्होंने 2007 में अपने करियर की शुरुआत की और पंजाबी म्यूजिक इंडस्ट्री में तेजी से लोकप्रिय हुईं। बॉलीवुड में उन्हें बड़ी पहचान फिल्म 'किंक' के गीत 'यार ना मिले' से मिली। उनके गानों में 'पांप, आर एंड बी और पंजाबी फोक का मिश्रण देखने को मिलता है। जैस्मीन न सिर्फ गायिका हैं बल्कि अपने कई गीत स्वयं लिखती भी हैं,

और अपनी बेबाक शैली व ऊर्जावान स्टेज परफॉर्मेंस के लिए जानी जाती हैं। जैस्मीन सैंडलस ने संगीत कार्यक्रम के दौरान यह बात साफरती पर कही कि जब तक महिलाएं खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करेंगी, वह तभी पर नहीं गाएंगी। वास्तव में, यह घटना बताती है कि आज भी सार्वजनिक जगहों पर महिलाओं को अभद्र व्यवहार का सामना करना पड़ता है। घर से बाहर निकलते ही उन्हें अपनी सुरक्षा की चिंता रहती है। दुख की बात यह है कि ऐसे मामलों में कई लोग सख्त देखकर भी चुप रहते हैं। आज आए दिन मीडिया की सुर्खियों में यह खबरें हमें पढ़ने को मिलती रहती हैं कि विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं को आज अभद्र टिप्पणियों, धूनें, छेड़छाड़ और उत्पीड़न जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बस, ट्रेन, बाजार, दफ्तर या यहां तक कि शैक्षणिक संस्थानों के आसपास भी वे असुरक्षा की भावना से घिरी रहती हैं। कहना गलत नहीं होगा कि घर से बाहर कदम रखते ही उन्हें अपने कपड़ों, समय और रास्तों तक के बारे में सोच-समझकर निर्णय लेना पड़ता है। वास्तव में, यह स्थिति केवल कानून व्यवस्था की कमी नहीं, बल्कि सामाजिक सोच की समस्या भी है। जब तक महिलाओं के प्रति सम्मान, समानता और संवेदनशीलता की भावना समाज में मजबूत नहीं होगी, तब तक केवल सख्त कानून भी पूरी तरह प्रभावी नहीं हो पायेगा। परिवार, विद्यालय और समाज सभी को मिलकर ऐसी मानसिकता विकसित करनी

होगी, जिसमें महिला को स्वतंत्र और सुरक्षित नागरिक के रूप में स्वीकार किया जाए। वास्तव में, सार्वजनिक स्थानों को सुरक्षित बनाना सरकार, प्रशासन और हम सभी नागरिकों की साझा जिम्मेदारी है। सीसीटीवी, हेल्सलान्ड, स्मिटर कार्टवाइ जैसे उपाय जरूरी हैं, लेकिन उससे भी अधिक जरूरी है जागरूकता और जिम्मेदार व्यवहार। जब महिलाएं बिना भय के स्वतंत्र रूप से बाहर निकल सकेंगी, तभी समाज वास्तव में प्रगतिशील कहलाएगा। हाल फिलहाल, जैस्मीन सैंडलस का यह कदम सिर्फ एक कार्यक्रम रोकना नहीं था, बल्कि महिलाओं के सम्मान और आत्मसम्मान के लिए खड़ा होना था। उन्होंने यह संदेश दिया कि किसी भी हालत में महिलाओं के साथ बदसलूकी बर्दाश्त नहीं की जानी चाहिए। कहना गलत नहीं होगा कि उनका यह साहस पूरे समाज के लिए एक सीख है। अंत में यही कहूंगा कि, जैसा कि हमारी संस्कृति में कहा गया है कि - शोचंति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कृत्वा न शोचंति च यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।'। तात्पर्य यह है कि जहाँ परिवार की स्त्रियाँ दुखी रहती हैं, वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है, और जहाँ वे प्रसन्न रहती हैं, वह परिवार सदैव उन्नति करता है। वास्तव में नारी ही परिवार की खुशी, राष्ट्र का गौरव और सुख की धुरी है, इसलिए उन्हें सदैव सम्मान मिलना चाहिए।

फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

## भारत में एपस्टीन फाइल्स की चर्चा क्यों?

डॉ. नीरज भारद्वाज

मीडिया में पिछले कई दिनों से एपस्टीन फाइल्स का नाम बहुत तेजी से रत रहा है। एपस्टीन फाइल्स नाम अपने आप में चौंका देने वाला है। लोग इसके कोटो, उसके कलकत्ता, शैती और इसके अंदर दिखाए जाने वाले कुर्काम पर चर्चा कर रहे हैं। वरों तरफ भय का वातावरण बना दिख गया है। विश्व के लगभग सभी बड़े घेरे इसमें दिखाई दे रहे हैं। अमेरिका और यूरोपीय देशों का यह कला सच है। अमेरिका और बहुत से यूरोपीय देशों में सेक्स की बात लेना साधारण सी बात हो सकती है क्योंकि ग्रीन सेक्स और खुला व्यापार वहां की नीति का हिस्सा है लेकिन छोटे-छोटे बच्चों को मारना, उनका मौस खाना, उनका जन्म उर्पीड़न करना आदि संभावित के नाम पर कला बनता है। अब वतों है भारतीय जीवन शैली की ओर। भारतीय जीवन शैली अश्लील से जुड़ी हुई है। यह आत्मा के मुकुट लेने की साधना पर चरती है। यहां आगमन के चक्र पर संयुक्त का सबसे बड़ा काम होता है। भारतीय समाज में संस्कृति की जड़ लग्न बन करती है तो यहां भोगवादी संस्कृति नहीं बल्कि आध्यात्मिक संस्कृति का सबसे बड़ा काम होता है। यहां पति-व्योहार, व्रत उतर्ने है कि लोग अर्थ में अपने जीवन की व्यवस्था और व्यक्तता को रखते हैं। मुकुट वर का वर के लिए सोलह सोनवार का व्रत करना (भगवान शिव की आराधना करना), ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए युवा गलतवार का व्रत करते हैं और अपने साधन तथा सिद्धि को पालन करते हैं। एकदमी को कितने ही स्त्री-पुरुष व्रत करते हैं। श्रेष्ठ मास में तो निर्रता एकदमी को व्रत, जब सूर्य अपने ताप पर होता है और वहां व्रत के बिना जीव का व्रत, कितनी बड़ी साधना का काम है। इसके साथ ही एक भारतीय संस्कृति की बात करें तो आप देखेंगे कि कृष्ण जन्माष्टमी के दिन लोग पूरे दिन पानी तक नहीं पीते और रात्रि 11:00 बजे या बंदना के दिखाई देने पर ही अपने व्रत को चरणान्त तथा व्रत आदि उखाकर उखलते हैं।

इतने बड़े संकल्प सिद्धि के इस देश में भोगवादी संस्कृति कहां दिखने वाली है। कल्पवास के समय भी प्रयागराज में लोग महीना भर अपना घर त्याग कर, व्रत कर के, बहुत से इनामियां पर बैठ जाते हैं। बहुत से कल्पवास में एक ही प्रकार का भोजन करते हैं। यह सब पारिवारिक लोग हैं जो परिवार की व्यवस्था में हैं। एक दम और तीज-व्योहार का पालन पारिवारिक लोग ही कर रहे लेते हैं। जब कल्पवास की बात होती है तो अपने मुकुट की लंबी आयु के लिए महिलाएं पूरे दिन कुष्ठ भी नहीं खाती, चंदना को देखकर ही रात को खोलती हैं। छठ नर्या का व्रत तो पूरी रात कर लेती हैं। केवल लक्ष्मी का व्रत भी माताएं करती हैं। संतोषी नां का भी व्रत करती हैं। बुर्यातिवार अर्थात् गुरुवार का व्रत भी करते हैं यानी कि भारतीय संस्कृति में व्रत की महीना है। खाने-पीने या भोग की प्रवृत्ति न लेकर अन्न-जल और दिव्य वस्तुओं को त्याग कर एक साधारण जीवन शैली की बहुत बड़ी साधकता है। अंकड़े बताते हैं कि सन 2015 प्रयागराज के महाकुंभ में लगभग साठ करोड़ लोगों ने खान किया। यह सब साधन लोगों को दिव्य ज्ञान देते हैं। संत लग्न सब लोगों को संत शौतिक या भोगवादी युग से दूर ले जाकर आध्यात्मिक चिंतन की ओर जोड़ते हैं। लम्बे वेद, शास्त्र, पुराण, काव्य आदि वैदिक ज्ञान परंपरा में अग्रणी हैं। कक्षाओं के अंदर त्याग ही त्याग है, आत्म शुद्धि है। आत्म शुद्धि के साथ-साथ आगमन के चक्र पर संयुक्त है।

लग्न सब भोग के लिए नहीं, बल्कि आत्म शुद्धि और कर्म प्रधान

समाज में कर्म करते हुए, आगमन के चक्र से मुक्त लेना दिखने वाली है। अमेरिका के अन्य देशों की बात करें तो वहां पर अश्लीलवादी नहीं बल्कि भोगवादी संस्कृति प्रायः देखो, वहां सेक्स का खुलापन है। वहां कपड़े पहनना या पहनना, एक स्त्री अनेक पुरुषों को देखने के लिए अनेक स्त्रियों के साथ, अपने संबंध स्थापित कर लेता है। ऐसे ही सब संताम उचित से भी रही है। परिवार के प्रति बहुत कम लोगों का रुझान देखने को मिलता है। बहुत सारे लोगों तो शादी ही नहीं करते बल्कि अपनी दैहिक भुख मिठाई के लिए बाजार का सहाय लेते हैं। सही मानकों में यही एपस्टीन फाइल्स हैं। इन देशों में देह बाजार में विक्रती है, लोग प्रयोग की वस्तु का न्यून देकर सुख भोग लेते हैं इन देशों में हर चीज बाजार है। हर वस्तु का भोग ही भोग है। अनुष्यता के नाम पर भी नर-नारी के बीच के संबंधों को ज्यादा नरता नहीं देते। यदि एक ऐसी फाइल्स अमेरिका और यूरोप के लोगों को लेकर खुलती है, जिसमें सेक्स के माध्यम से अलग-अलग देशों के बड़े-बड़े धनपति और उद्योगपति दिखाई देते हैं तो कोई बड़ी बात नहीं है। दूसरी ओर और भय रस है कि वहां पर कम अन्न के बच्चों के साथ जीवन शोषण से रस था। वह उर देशों की विद्वंभना है। वह यही सब संताम की यदि एक बात करें तो वह इन बातों का प्रकाश पुनः है। अश्लील, दर्शन, भक्ति, योग, साधारण आदि के साथ साधन सभी साधन, संत, महात्माओं को प्राप्त प्राण। यह लग्न सब साधन लोगों को दिव्य ज्ञान देते हैं। संत लग्न सब लोगों को संत शौतिक या भोगवादी युग से दूर ले जाकर आध्यात्मिक चिंतन की ओर जोड़ते हैं। लम्बे वेद, शास्त्र, पुराण, काव्य आदि वैदिक ज्ञान परंपरा में अग्रणी हैं। कक्षाओं के अंदर त्याग ही त्याग है, आत्म शुद्धि है। आत्म शुद्धि के साथ-साथ आगमन के चक्र पर संयुक्त है।

लग्न सब भोग के लिए नहीं, बल्कि आत्म शुद्धि और कर्म प्रधान

अश्लीलता पैदा की, अपने धर्म का प्रचार-प्रसार किया। समाज को खंड-खंड कर दिया। वरों और भय का वातावरण पैदा किया गया। इतना कुछ लेने के बाद भी लम्बरी संस्कृति, लम्बरी संस्कार, पीढ़ी दर पीढ़ी अमेरिका और अश्लीलता का सा सकता है कि समय के प्रवाह के साथ कुछ एक अग्रवाद जरूर जाते हैं। अन्न कुछ एक लोग ऐसी संस्कृति के साथ भी देखे जा सकते हैं लेकिन पूरी समाज व्यवस्था पर प्रखर गिनल नहीं लगाया जा सकता है। इसके साथ ही एक ओर बात भी वहीं शोभी-समजी जा सकती है। आत पूरा विश्व आर्थिक कमजोरी की स्थिति में कसा हुआ है। पहले दूसरे विश्व युद्ध में अर्थविशेषवाद को लेकर युद्ध हुआ, अब अर्थविशेषवाद नहीं है अर्थात् कोई किसी का गुलाम देना नहीं है। विश्व के बड़े देश बाजार को साधने में लगे हुए हैं। सभी अपने वर्यव्य को बचाने के लिए लगे हुए हैं। विश्व वरों तरफ युद्ध के भाविल से अन्न रस है। इसमें यूरोपीय देश और अमेरिका यह सब वैश्विक मंटी से उर मरसूस कर रहे हैं। ऐसे में विश्व को बचाने के लिए एक देश अमेरिका और अन्य देश मिलकर ऐसी वर्या को दिव्य में जीवित करना चाह रहे हैं जिससे कि दिव्य का ध्यान उन सब बातों से उर जाे। डी जैलराजिअन, वरों की मार्केट में काइरिसि आना, उद्योगपतियों का उसे देश के प्रति ध्यान लक्षण आदि, एशियाई देशों का वर्यव्य बढ़ना, व्यापारियों का वर्य वर्यव्य बढ़ना, नए उद्योग-धंधों का शुरु कल्याण आदि भी इन देशों को खटक रस है। वरों उर का नाशेल बना हुआ है, इस उर के भाविल से अन्न के लिए अमेरिका, उसके सख्योनी देना या वरों की सरकार उसे खुलासे दुनिया के सभने न रख देना चाहती है। लोगों का ध्यान भंग हो जाएगा और वर्य वर्य उत्स्र कर रह जांये तथा अपना काम मिलकाले की सोच रहे हैं जबकि यह सारी धनना या इन फाइल्स के जो भी कार्य है, वह बहुत प्राप्त पुराने है और कुछ ताजा भी है।

मनोरंजन शासमल, स्टेट डेड ओडिशा

भूबनेश्वर : कान्हु चरण लेंका का निधन हो गया। उन्हें कुनु चरण लेंका के नाम से भी जाना जाता था। वे ओडिशा से भारतीय संसद के ऊपरी सदन, राज्य सभा के लिए सांसद चुने गए थे। उन्होंने पी. वी. नरसिम्हा राव सरकार में रेल मंत्री और कृषि मंत्री के तौर पर काम किया। इससे पहले, वे ओडिशा विधानसभा के लिए चुने गए थे और ओडिशा विधानसभा में मंत्री के तौर पर काम किया। जाने-माने पॉलिटिशियन और पूर्व यूनियन मिनिस्टर कान्हु चरण लेंका का गुरुवार सुबह 9:45 बजे एक प्राइवेट हॉस्पिटल में निधन हो गया। वे 95 साल के थे। लेंका ओडिशा के एक लड़ाकू सैनिक थे और बाद में इंडस्ट्रीज मिनिस्टर रहे।



यूनियन मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर रेलवे के तौर पर भी काम किया। अपने करियर के दौरान, लेंका अपने साल के थे। लेंका ओडिशा के एक एडमिनिस्ट्रेटिव एक्सपिरियंस और पब्लिक सर्विस के प्रति कमिटेमेंट के लिए जाने जाते थे। योगदान: लेंका के लंबे पॉलिटिकल सफर ने ओडिशा के डेवलपमेंट और गवर्नेंस में उनके गहरे इन्वॉल्वमेंट को दिखाया। पार्टी लाइफ से अलग उनके साथियों ने पब्लिक लाइफ में उनके योगदान और युवा लीडर्स को मेंटर करने में उनके रोल की तारीफ की है। उनके जाने से ओडिशा की पॉलिटिक्स में एक युग का अंत हो गया है। कई नेताओं और शुभचिंतकों ने उनके परिवार और समर्थकों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की है।

**वेलेंटाइन डे पर विशेष कविता मर्यादा न भूल जाना ...!**  
करिए 'इजहार-ए-मोहब्बत' बाबू-शोना, 'सभ्यता-संस्कृति' का 'ध्यान' रख लें।  
पवित्र प्रेम की मर्यादा को न भूल जाना, सच्चे प्यार को 'सार्वजनिक' ना बनाना।  
माना कि 'इजहार' के बहुत से हैं तरीके, तुम रास्ते चलते भी नहीं खोना सलिकें। इश्क तो 'सुपाए' भी कहीं नहीं है चुपचा, रिसर अपने पालकों के सामने है झुकता।  
यद रक्षिए शाशवत प्रेम ही है दीपक राग, ऐसा कोई कदम न उठाना की लगे दान। पालकों इश्क 'परमान' चढे सहमति देना, दुःखद अंत हो ऐसी नाबत ना आने देना।  
संजय एम तराणेकर

## टीवी चैनलों पर कोल्ड ड्रिंक के विज्ञापन बार-बार दिखते हैं, लेकिन स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम कम दिखाई देते हैं क्यों? मुख्य कारण पैसा और टीआरपी सिस्टम !

परिवहन विशेष न्यूज

1. विज्ञापन से कमाई होती है टीवी चैनलों की कमाई का मुख्य स्रोत विज्ञापन है।

\* कोल्ड ड्रिंक जैसी बड़ी कंपनियों करोड़ों रुपये खर्च करके बार-बार विज्ञापन दिखाती हैं, क्योंकि: उनका लक्ष्य ज्यादा बिक्री करना होता है। जितनी बार विज्ञापन दिखेगा, उतना ब्रांड याद रहेगा। प्राइम टाइम में ज्यादा दर्शक मिलते हैं इसलिए चैनल उन्हें ज्यादा पैसा देते हैं।

2. स्वास्थ्य कार्यक्रमों में विज्ञापन कम मिलते हैं

\* स्वास्थ्य से जुड़े कार्यक्रम: कम मनोरंजक माने जाते हैं \* टीआरपी अक्सर कम होती है इसलिए कंपनियाँ इनमें कम विज्ञापन देती हैं इसलिए चैनल उन्हें बहुत कम या एक-दो बार वही भी सुबह के समय दिखाते हैं।

3. टीआरपी (दर्शक संख्या) का असर अगर दर्शक मनोरंजन, रियलिटी शो या

सीरियल ज्यादा देखते हैं, तो चैनल वही सामग्री बढ़ाते हैं। स्वास्थ्य कार्यक्रम की मांग कम दिखती है, इसलिए उसे कम समय मिलता है।

4. कंपनियों की मार्केटिंग रणनीति

\* कोल्ड ड्रिंक कंपनियाँ: \* सेलिब्रिटी से विज्ञापन करवाती हैं \* बच्चों और युवाओं को टारगेट करती हैं \* त्योहार, क्रिकेट मैच आदि के समय विज्ञापन बढ़ाती हैं। इससे विज्ञापन बार-बार दिखते हैं।

क्या यह सही है? यह एक सामाजिक बहस का विषय है।

कई लोग मानते हैं कि: जंक फूड और कोल्ड ड्रिंक के विज्ञापन सीमित होने चाहिए और स्वास्थ्य शिक्षा को ज्यादा समय मिलना चाहिए।

हम आपकी जानकारी के लिए एक बात



गुरुओं को बुलाया गया था और उस कार्यक्रम को देखने और सुनने बहुत सारे श्रोताओं भी आए थे।

संस्था द्वारा इस कार्यक्रम में पानी की बॉटल्स और विविध ब्रांड के कोल्ड ड्रिंक्स का इंतजाम किया हुआ था। वहां श्रोताओं और वक्ताओं ने पानी कम और कोल्ड ड्रिंक्स ज्यादा पी।

1. स्वास्थ्य के कार्यक्रम टीवी पर दिखाए जाते हैं, 2. स्वास्थ्य के बारे में अखबारों में लेख भी छपते हैं। 3. स्वास्थ्य गुप्स में बहुत सारी जानकारी उपलब्ध होती है।

फिर भी तथाकथित पढ़े-लिखे लोगों को कोल्ड ड्रिंक्स से होनेवाली बीमारियों के बारे में पता ही नहीं है या चिंता नहीं है।

निष्कर्ष सरकार को नियम सख्त करने चाहिए।

## अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सम्मान समारोह, मार्च 2026, आवेदन आमंत्रित हैं अंतिम तिथि 7/03/2026.

परिवहन विशेष न्यूज

देश विदेश की महान हस्तियां होगी शामिल अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधित्व प्राप्त (महिला एवं बाल विकास को समर्पित संस्थान) WPSF द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सम्मान समारोह 2026 (सौजन्य) जयपुर में!

प्रतिवर्ष की भांति महिला शक्तियों के हितों में अन्तुटी पहल, ब्रेक फास्ट के साथ (अपराहन भोजन संलग्न किया गया है)

\*यूमेन पॉवर सोशल्लिटी फाउण्डेशन इंडिया, जयपुर द्वारा इस गौरव मयी सम्मान समारोह में मानवता रूपी महायज्ञ में समाज की महान महिला शक्तियों का र मानव जीवन की उत्कृष्टता एवं कन्या जन्म गौरव स्वाभिमान सम्मान र नारी शक्तियोरं का विभिन्न क्षेत्र में विशेष अनुभव, योगदान, जो खास तौर पर समाज हित में महिलाओं, बच्चों के शिक्षा, संरक्षण, अधिकार, रोजगार, चिकित्सा/स्वास्थ्य, कन्या जन्म, कन्या शिक्षा आदि के क्षेत्र में आवाज/पहचान बनकर हर क्षेत्र जैसे संस्था, ऑर्गेनाइजेशन, इंस्टीट्यूशन क्षेत्र, गायन, पर्यावरण, रचनात्मक, कलात्मक, शिक्षा, स्पेशल एजुकेशन, चिकित्सा, मिडिया, मनोरंजन, खेल कूद,

प्राप्त के मार्ग प्रशस्त करता है ! कार्यक्रम में मुख्य आतिथ्य /सहयोग राजनेता, समाज सेवी, फिल्मी हस्तियां, उद्योग पति, संत, कॉरपोरेट, प्रशासनिक अधिकारी, न्याय क्षेत्र, मीडिया के महानुभावों का गौरव शाली सहयोग एवं उपस्थिति प्राप्त होगी, इस अवसर पर दान, सहयोग कर पुण्य प्राप्त करें, सम्मान समारोह में आपकी मानव जीवन की उत्कृष्टता को देखते हुए, हमेशा र यूमेन पॉवर सोशल्लिटी फाउण्डेशन, जयपुर र आपकी गौरवमई उपस्थिति का स्वागत करेगी ! आवश्यक निर्देश निम्न सामाजिक हस्तियों ने विगत वर्षों में र कन्या जन्म गौरव स्वाभिमान सम्मान र की सदस्यता ग्रहण की हुई है, उन्हें 50% सदस्यता ही प्रदान करनी होगी ! कार्यक्रम में किसी भी प्रकार का फेरबदल

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सम्मान समारोह में 51 महान नारी शक्तियों को सम्मान देना उचित समझ कर र घर परिवार समाज क्षेत्र, राज्य, देश में नारी शक्ति के शिक्षा, संरक्षण, अधिकार सवोपरि है की भावना को ध्यान में रखते हुए, र साथ ही 21 विभूतियों को \*मानव जीवन की उत्कृष्टता का सम्मान \*भी दिया जाना प्रस्तावित है। " (महिला एवं बाल विकास) को समर्पित संस्था के सम्मान समारोह में सभी समाज की उत्कृष्टता रखने वाली महिला हस्तियां उपस्थित होंगी !

आपका, सहयोग गरीब, जरूरत मंद, असहाय लोगों के हितों, महिलाओं, बच्चों के पोषण में काम आकर आपको मानव मात्र पुण्य



करने का संस्था WPSF को पूर्ण अधिकार है !

## अग्निवीर आर्मी भर्ती की ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन 13 फरवरी से शुरू

अमृतसर, 13 फरवरी (साहिल बेरी)

भारतीय सेना में भर्ती लेने के इच्छुक युवक एवं युवतियों के लिए सुनहरा अवसर है। इस संबंध में जानकारी देते हुए जिला रोजगार एवं कारोबार ब्यूरो की मुख्य कार्यकारी अधिकारी सर अश्विनीका त्रिपाठी (हस्तियां विकास) श्रीमती अश्विनीका कोर ने बताया कि अग्निवीर आर्मी भर्ती की ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया 13-02-2026 से शुरू हो चुकी है। इस बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए जिला रोजगार एवं कारोबार ब्यूरो, अमृतसर के रोजगार अधिकारी श्री मुकेश सरंगल ने बताया कि इस भर्ती के लिए आयु सीमा 18 से 22 वर्ष निश्चित की गई है तथा 12वीं पास अस्थायी आवेदन कर सकते हैं। अस्थायी को सेना के नियमों के अनुसार शारीरिक रूप से फिट सेना आवश्यक है। उम्मीद है कि वे भी बताया कि पहले अधिकारण आयु सीमा 21 वर्ष थी, जिसे बढ़ाकर 22 वर्ष कर दिया गया है। इच्छुक अस्थायी एक ही समय में दो अलग-अलग पदों के लिए भी आवेदन कर सकते हैं। करियर काउंसलर श्रीमती भारती शर्मा ने बताया कि सेना में भर्ती के इच्छुक उम्मीदवार अधिकारिक वेबसाइट भारतीय सेना की वेबसाइट www.joinindianarmy.nic.in पर प्रारंभिक प्रश्न पत्र प्रकट कर सकते हैं।

अधिक जानकारी संबंधित वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा किसी भी कार्यालय में जिला रोजगार एवं कारोबार ब्यूरो, अमृतसर में व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया जा सकता है या कार्यालय के हेल्पलाइन नंबर 9915176890 पर संपर्क किया जा सकता है।

## अभियान "युद्ध नशों के विरुद्ध" को उस समय और अधिक बल मिला, स्टाफ तथा विद्यार्थियों ने एक जागरूकता साइकिल रैली और पैदल मार्च का आयोजन किया (साहिल बेरी)

आज पंजाब सरकार की ओर से नशों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान "युद्ध नशों के विरुद्ध" को उस समय और अधिक बल मिला, जब दयानंद आईटीआई, अमृतसर के प्रिंसिपल डॉ. संजीव शर्मा के नेतृत्व में स्टाफ तथा विद्यार्थियों ने एक जागरूकता साइकिल रैली और पैदल मार्च का आयोजन किया।

यह रैली दयानंद आई टी आई कॉलेज हाथी गेट से प्रारंभ होकर लौहगढ़ चौक, खजाना गेट चौक, बी.के. दत्त गेट, हॉल गेट, हॉल बाजार, भरावन ढाबा, कटरा जमैल सिंह, फरीद कटरा तथा कटरा शेर सिंह से होते हुए पुनः दयानंद आईटीआई परिसर में संपन्न हुई।



इस अवसर पर प्रिंसिपल डॉ. संजीव शर्मा एवं स्टाफ सदस्यों ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह रैली पंजाब सरकार द्वारा नशों के विरुद्ध चलाई जा रही मुहिम के समर्थन में एक जागरूकता प्रयास है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे स्वयं किसी भी प्रकार के नशों से दूर रहे तथा अपने घर, मित्रों, गांव और परिचितों को भी नशों के

दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करें। उन्होंने कहा कि ऐसे सामूहिक प्रयासों और जन-जागरूकता अभियानों के माध्यम से हम अपने पंजाब को पुनः माननीय मुख्यमंत्री जी के सपनों के अनुरूप "रंगीला पंजाब" बनाने में सफल हो सकते हैं।

इस जागरूकता रैली को सफल बनाने में श्री बरिंदरजीत सिंह ट्रेनिंग ऑफिसर, श्री सुखदेव सिंह ट्रेनिंग ऑफिसर, श्री कमलकांत ट्रेनिंग ऑफिसर, एनएसएस कोऑर्डिनेटर श्री रंजीत सिंह वायरमैन इंस्ट्रक्टर, एनसीसी ऑफिसर श्री गगनदीप सिंह ड्राफ्ट्समैन मैकेनिकल इंस्ट्रक्टर, सहित संस्थान के समस्त स्टाफ सदस्यों और विद्यार्थियों ने विशेष योगदान और सराहनीय मेहनत की।

## आज बाबा दंद राम बैरागी जी का पवित्र स्थान को और भी सुंदर स्वरूप देने के लिए मुख्य सेवेदार श्री बलदेव राज बैरागी जी द्वारा संगमरमर लगाने के कार्य का शुभारंभ किया गया।

अमृतसर, 13 फरवरी (साहिल बेरी)

यह यावन धार्मिक स्थल गुमानपुरा भैनी बासरके रेलवे लाइन के ऊपर स्थित है और लगभग 600 वर्ष से भी अधिक प्राचीन इतिहास से जुड़ा हुआ है। क्षेत्र की संगतों के लिए यह स्थान गहरी आस्था और श्रद्धा का केंद्र बना हुआ है। स्थानीय निवासियों के अनुसार इस पवित्र धरा से अनेक चमत्कारी कथाएँ और आध्यात्मिक अनुभव जुड़े हुए हैं। मान्यता है कि यहाँ सच्चे मन से अरदास करने वाले प्रत्येक भक्त की मनोकामना पूर्ण होती है।

मुख्य सेवेदार श्री बलदेव राज बैरागी जी ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि स्थल की सुंदरता और विकास के



लिए यह प्रयास संगतों के सहयोग से ही संभव हो पाया है। उन्होंने कहा कि संगमरमर लगाने से स्थल की शोभा में वृद्धि होगी और आने वाली पीढ़ियों के लिए

भी यह धार्मिक विरासत सुरक्षित रहेगी। इस अवसर पर क्षेत्र की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और सेवाभावी संस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित बड़ी

संख्या में संगत उपस्थित रही। समस्त संगत ने अरदास कर स्थल की उन्नति एवं समूचे विश्व की भलाई के लिए प्रार्थना की।

## रमजान को देखते हुए वाराणसी के सभी वार्डों में स्ट्रीट लाइट सीवर जाम की हर समस्या को जल्द से जल्द दुरुस्त कराए सभी पार्षद

परिवहन विशेष न्यूज

वाराणसी रमजान का पाक महिना शुरू होने वाला है ऐसे में क्षेत्र में साफ सफाई के साथ सभी वार्डों में स्ट्रीट लाइट सीवर लाइन को जल्द से जल्द सही कराए बजर डीहा क्षेत्र वार्ड नंबर 27 में कई जगह पर सीवर जाम की बड़ी समस्या है जिससे बजर डीहा आजाद नगर जक्का टीना वाली मस्जिद के पास सालों से सीवर जाम की गंभीर समस्या है जिससे मस्जिद में

नमाज अदा करने वाले लोगों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है रमजान के पाक महिने में बस कुछ ही दिन बचे हैं उत्तर प्रदेश के पूर्व मिडिया प्रभारी वसीम अहमद ने सभी पार्षदों से अपील करते हुए कहा कि क्षेत्र के पार्षद को चाहिए कि अपने अपने वार्डों में जो भी समस्या है उसे जल्द से जल्द दुरुस्त कराए ताकि क्षेत्र में स्ट्रीट लाइट सीवर लाइन गली में साफ सफाई के साथ जिस गली में

लाइट नहीं है उस गली में लाइट लगवाए ताकि रात में आने जाने वाले को को दिक्कत ना हो जिस तरह चुनाव से पहले गली गली में घूमकर वोट मांगने गए थे उसी तरह सभी पार्षद अपने वार्डों में घूमकर अपने वार्डों की समस्या को देखें जहां भी जो समस्या है उसे जल्द से जल्द उस समस्या का समाधान करें वसीम अहमद पूर्व मिडिया प्रभारी उत्तर प्रदेश

## शहर में प्रदूषण की स्थिति चिंताजनक : डॉ. राजकुमार यादव



परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला शहर में बढ़ते प्रदूषण को लेकर चिंता लगातार बढ़ती जा रही है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने शहर के वातावरण की स्थिति को दयनीय बताते हुए कहा कि औद्योगिक गतिविधियों के कारण प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुंच रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि वेस्ट फाइन डस्ट, इंडस्ट्रियल वेस्ट, फ्लाई ऐश तथा अन्य हानिकारक प्रदूषित सामग्री शहर की परिधि में रोकने के बजाय सीधे शहर के अंदर प्रवेश कर रही है, जिससे आम नागरिकों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है।

डॉ. यादव ने कहा कि प्लूटो मॉल के पास फ्लाई ऐश का जमा होना तथा बेलडोह और कलुंगा क्षेत्रों में रात के अंधेरे में फ्लाई ऐश डंपिंग की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं, जो शहरवासियों के लिए चिंता का विषय है। स्थानीय इलाकों में दिन में दो बार सफाई होने के बावजूद धूल और राख की परत जम रही है, जिससे छोटे बच्चों और बुजुर्गों को सांस लेने में परेशानी हो रही है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि कुछ लोगों द्वारा वेदव्यास, टीसीआई



और दंडियापाली क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर औद्योगिक कचरा डंप कर वातावरण को और अधिक प्रदूषित किया जा रहा है। उन्होंने क्षेत्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि यदि अधिकारी संसाधनों की कमी या अन्य कारणों से प्रदूषण रोकने में असमर्थ हैं, तो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी

'चंदा जुटाओ अभियान' चलाकर सहयोग देने को तैयार है। इस अभियान से एकत्रित राशि स्थानीय ओएसपीसीबी राउरकेला कार्यालय में जमा की जाएगी। डॉ. यादव ने प्रशासन से समय रहते ठोस कदम उठाने की अपील करते हुए चेतावनी दी कि यदि स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो व्यापक जन आंदोलन किया जाएगा।

## राजकीय आई टी आई खरखोदा में सड़क सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया।

परिवहन विशेष न्यूज

राजकीय आई टी आई खरखोदा में सड़क सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के प्रधानाचार्य संदीप कुमार अहलावत ने की। सेमिनार में जिला प्रशासन सोनीपत की ओर से श्री संदीप बत्रा, जिला सड़क सुरक्षा संयोजक, ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत कार्यालय अधीक्षक राजेन्द्र नांदल के स्वागत उद्घोषण से हुई, जिसमें उन्होंने कहा कि आज के समय में सड़क दुर्घटनाएँ एक गंभीर समस्या बनती जा रही हैं और युवाओं को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने छात्रों से अपील की कि वे यातायात नियमों का ईमानदारी से पालन करें और सुरक्षित जीवन को प्राथमिकता दें। सेमिनार को संबोधित करते हुए श्री संदीप बत्रा ने छात्रों को सड़क सुरक्षा की महत्ता के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने



दोपहिया वाहन चलाने समय हेलमेट पहनने, चारपहिया वाहन में सीट बेल्ट लगाने, गति सीमा का पालन करने, नशे की हालत में वाहन न चलाने तथा मोबाइल फोन का प्रयोग न करने जैसे महत्वपूर्ण नियमों पर विशेष जोर दिया। उन्होंने उदाहरणों के माध्यम से बताया कि छोटी-छोटी सावधानियाँ अपनाकर बड़ी दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है। श्री बत्रा ने छात्रों को प्रेरित करते हुए कहा कि युवा वर्ग यदि स्वयं जागरूक बने और अपने परिवार व समाज को भी सड़क सुरक्षा के प्रति

जागरूक करें, तो दुर्घटनाओं में निश्चित रूप से कमी लाई जा सकती है। छात्रों ने भी सेमिनार के दौरान पूछे गए प्रश्नों के माध्यम से विषय में गहरी रुचि दिखाई। इस अवसर पर कार्यालय अध्यक्ष राजेन्द्र नांदल, वर्ग अनुदेशक बिजेन्द्र सहित संस्थान के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में कार्यालय अधीक्षक राजेन्द्र नांदल ने मुख्य वक्ता का आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में भी ऐसे जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया।